Annual Subscription Rs. 100/-

ओ३म्

27 th April 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

शराब के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन की तैयारी

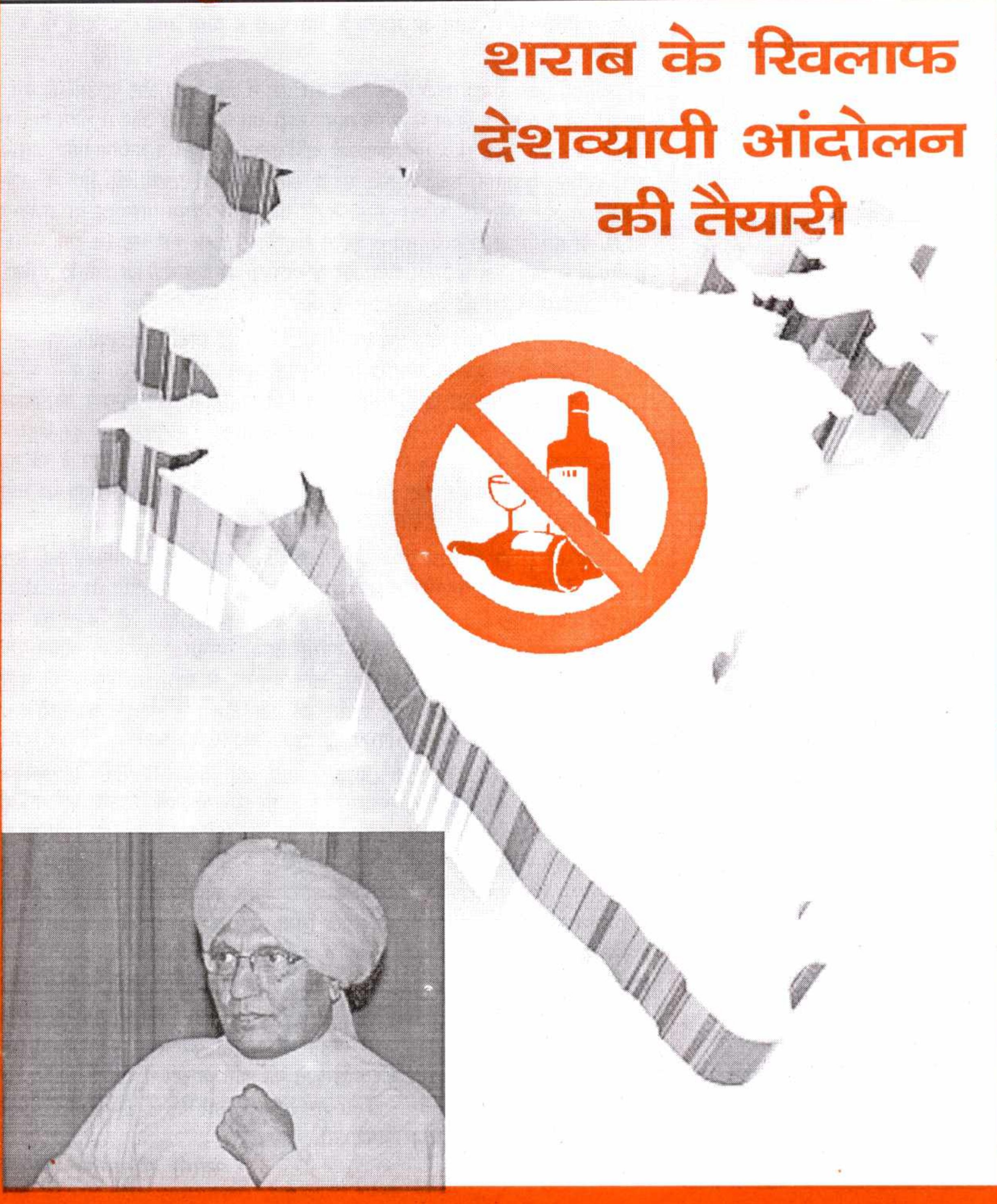

ओ३म्
आर्य जीवन
संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్
హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : ०८
दयानन्दाब्द : १८९
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०६९
नंदन नाम संवत् चैत्र कृष्ण पक्ष
२७-४-२०१३

सम्पादक
विठ्ठलराव आर्य
वार्षिक मूल्य रू. 100
कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद
दूरभाष: 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्स: 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

प्रत्येक मनुष्य को पुरुषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

विचार-शक्ति

मानव अपने प्रत्येक क्रिया-कलाप अन्तःकरण में उत्पन्न हुए विचार के अनुसार ही करता है। अन्तःकरण के चार उपकरण हैं- मन, बुद्धि, चित्त और बाहरी अहंकार।

मन में संकल्प-विकल्प का विचार आन्तरिक चित्त अथवा बाहरी इन्द्रियों के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं, तब मन बुद्धि से निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करता है। बुद्धि पर यदि अहंकार का प्रभाव है, तो अनुचित निश्चय हो सकता है। यह अन्तिम निश्चयात्मक ज्ञान ही विचार को क्रिया में बदलता है। तदानुसार कर्मेंद्रियाँ कार्य आरम्भ कर देती हैं। किसी अप्रत्याशित घटना से विचार में परिवर्तन आ सकता है और कार्य में बाधा आकर परिणाम भी बदल जाते हैं।

इसे आप इस प्रकार समझ सकते हैं कि महाभारत युद्ध में जब कौरव और पाण्डवों की सेनाएं कुछ दूरी पर कुरुक्षेत्र के मैदान में आमने-सामने खड़ी थीं। कौरवों की ओर से भीष्म पितामह सेनापति थे और उनके साथ गुरु द्रोणाचार्य कपिलाचार्य, गुरुपुत्र अश्वत्थामा,मामा शकुनि, कर्ण, दुर्योधन, दुःशासन, आदि कुटुम्बी सदस्य और पितर थे। पांडवों की ओर से अर्जुन सेनापति थे और धर्मराज युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव तथा पांडवपुत्र थे। अर्जुन के रण रथ के सारथी श्री कृष्ण थे। तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा। भाई मेरा रथ दोनों सेनाओं के बीच में ले चलो, जिससे कि मैं दोनों ओर के योद्धाओं को देख सकूँ कि कौन किस स्थिति में है । श्रीकृष्ण ने रथ को दोनों सेनाओं के बीच में ले जाकर खड़ा कर दिया।

अर्जुन के मन में इस स्थिति तक पूर्ण रूप से युद्ध करने का विचार था। क्योंकि वह अपने भाईयों के साथ तेरह वर्ष का कष्टप्रद जीवन बिता चुका था। परंतु युद्ध भूमि में कौरवों की ओर से अति सम्मानित और पूजनीय कुल पितरों, गुरुओं और बान्धवों को देखकर अर्जुन का विचार बदल गया। और अस्त्र-शस्त्र रखकर रथ से उतरकर वह दूर खड़ा हो गया। उसने कृष्ण से कहा, कि मैं युद्ध नहीं लडूँगा, भलेही कौरव मुझे मार दे या मुझे भीख माँगकर जीवन बिताना पड़े। मैं सगे पितरों, भाई-बन्धुओं को मारकर पाप का भागी बनकर राज्य नहीं करना चाहता।

यह प्रभाव था अर्जुन के चित्त पर पड़े वृद्धों के प्रति आदर सेवा के संस्कारों का, परंतु यह युद्ध भूमि में क्षत्रिय धर्म निभाने में बाधक था। श्रीकृष्ण वेदों के ज्ञाता थे। और क्षत्रिय धर्म में विशेष निपुण थे। उन्होंने जब अर्तुन को कर्तव्य विहीन देखा, तो अर्जुन को पास बुलाया और उसे छात्र धर्म, देश, काल परिस्थितियों, विभिन्न अवस्थाओं, जीवन-मरण आदि के रहस्यों को समझाया, (यह सारा ज्ञान वर्तमान में गीता में उपलब्ध है) परन्तु अर्जुन फिर भी युद्ध को तैयार न हुआ और यह देख कौरवों में हर्षोल्लास का माहौल छा गया। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन की भर्त्सना की। उसे धिक्कारा और कहा, तू रथ का सारथी बन, तेरी जगह मैं युद्ध करूँगा और गाण्डीव धनुष उठा लिया। यह देख और स्वयं को अपमानित महसूस कर अर्जुन का विचार फिर बदला और श्रीकृष्ण से कहा, मेरे मन की दुर्बलता अब समाप्त हो गई है। मैं युद्ध करूँगा और पूरे मनोयोग से करूँगा। आप सारथी बने रहें। यह है मन के विचार की शक्ति, जिससे मनुष्य जीवन रूपी रास्ते में ठोकर खाता है, गिरता है और सम्भलकर उठ जाता है और जीवन को सफल बना सकता है। मन के विचारों पर नियंत्रण रखना जिसने सीख लिया, उसे कभी असफलता के दर्शन नहीं होते। जिनके विचार अनियंत्रित होते हैं, वे दुःख उठाते हैं। धर्मराज युधिष्ठिर ने यदि शकुनि के उकसावे में आकर जुए को आल्हाद युद्ध (आमोद-प्रमोद युद्ध) न माना होता, तो महाभारत की नींव ही न रखी जाती। परंतु शकुनि ने मनोवैज्ञानिक ढंग से धर्मराज के विचारों को बदल दिया और जुआ खेलने को सहमत कर लिया। जिसका परिणाम भयंकर जन-हानि, धन-हानि और वैदिक संस्कृति की हानि के रूप में देखना पड़ा है। मूल कारण दुर्योधन के स्वार्थ पूर्ण विचार ही थे। शुभ विचार उत्पन्न होते हैं ऋषियों के ग्रंथ पढ़ने से, सत्संग से, विद्वानों से विचार-विमर्श से।

- स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

शराब के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन १ मई से

प्रसिद्ध समामाजिक कार्यकर्ता अग्निवेशजी ने देहरादून में की घोषणा

बलात्कार को रोकना है, तो शराब को मिटाना होगा, इस नारे को लेकर मजदूर दिवस एक मई पर छत्तीस गढ़ के महासमन्द के पास बसना से देशव्यापी आन्दोलन शुरू किया जाएगा। इस क्षेत्र में २५ वर्ष पहले चार हज़ार बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने के बाद पुनर्वासित किया गया। बंधुआ मजदूरों की यह संगठित सेना अब आगे शराबबन्दी आंदोलन करेगी। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी तथा प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश जी ने आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से देहरादून पहुँचकर पत्रकारों से वार्ता की। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि देशभर में हो रही बलात्कार की बीभत्स घटनाओं के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण शराब का उपभोग है। शराब के नशे की वजह से दरिंदगी की हद तक हैवायिनत पर उतर जानां यह सिद्ध करता है कि बलात्कार एवं हत्या जैसे जघन्य काण्डों में शराब का नशा प्रायः एक प्रमुख कारण होता है। स्वामी जी ने कहा कि बलात्कार सहित प्रत्येक प्रकार के अपराध को रोकने के लिए जहाँ अन्य उपाय ज़रूरी हैं, वहीं एक महत्पूर्ण कारगर उपाय है शराब के उत्पादन, वितरण एवं उपभोग पर पूर्ण रूप से पाबंदी लगायी जाना। स्वामीजी ने कहा कि इस दिशा में जन-चेतना जगाने के लिए समाज और सरकार तथा उद्योग जगत को मिलकर कदम उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान की धारा - ४७ में पूर्ण शराबबन्दी की नीति लागू करना राज्य के निदेशक सिद्धांतों में शामिल है। क्या आज के नेता महात्मा गाँधीजी की याद में पुष्पांजलि अर्पित करते समय यह सोचते हैं कि अहिंसक गाँधी ने आज़ादी के बाद सबसे पहला काम भारत से शराब का नामोनिशान मिटाने के लिए कहा था? क्या हमारी संसद पीछे मुड़कर १९५६ में संसद के दोनों सदनों में पारित उस प्रस्ताव पर पड़ी धूल को झाड़कर पूर्ण शराबबन्दी का संकल्प दुहरा सकेगी? स्वामीजी ने कहा कि सरकारें कहती हैं कि शराब की दुकानें बन्द कर दी जाएंगी, तो आर्थिक स्थिति पर असर पड़ेगा। क्योंकि लोगों को बर्बाद कर देने वाली शराब की बिक्री से सबसे ज्यादा आय प्राप्त होती है। लेकिन अभी तक के अध्ययन में यह सामने आया है कि शराब की वजह से होने वाली घटनाओं को रोकने का खर्च इससे होने वाली आय से कहीं अधिक है। स्वामीजी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अन्य अच्छी बातों के साथ अपने बच्चों को यह पढ़ाएं कि सभी धर्मों में शराब सेवन की निन्दा की गई है। यह बहुत गन्दी चीज़ है। इसके सेवन से परिवार, समाज तथा राष्ट्र तीनों का अकल्पनीय नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि क्या हो गया है इस देश की महान संस्कृति को, दुनिया को ब्रह्मचर्य, सदाचार, संयम का पाठ पढ़ाने वाला भारत आज विकास के नाम पर शराब की नदियों में गोते लगा रहा है। इसको रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किया जायेगा। इस आंदोलन में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े कार्यकर्ता शामिल होंगे तथा इस महत्वपूर्ण विषय पर सरकारों से भी बात की जायेगी। स्वामीजी ने कहा कि जिस तरह से सेक्स एजुकेशन (जिसे स्वामी अग्निवेश जी ने संयम की शिक्षा नाम दिया) अब ज़रूरी हो गई है। इसके अतिरिक्त शराब पीने से होने वाले नुकसान की जानकारी भी स्कूली बच्चों को जी जानी चाहिए। समाज में फैल रहे अनाचार, को समाप्त करने का ये बड़ा माध्यम होगा। संविधान में शराब पर पाबंदी की बात कही गई है। लेकिन हकीकत में इसका पालन कभी नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि संविधान का उल्लंघन अपराध की श्रेणी में आता है । ऐसा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। स्वमीजी ने बताया कि मजदूर दिवस एक मई को छत्तीसगढ़ से देशव्यापी आंदोलन शुरू करने की तैयारी पूर्ण हो चुकी है तथा इस आंदोलन के दूसरे चरण की शुरुआत लोकनायक जय प्रकाश नारायण के जन्मस्थान सिताबदियारा, (छपरा) से ७ मई को शुरू होगी। पूरे देश के आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि वे आगे बढ़कर इस आंदोलन का नेतृत्व करें और शराब विरोधी सभा ताकदों को एकजुट करें।

अब अपवाद ही हैं मिसालें

आज जब देश में हर तरफ अनैतिकता और भ्रष्टाचार हावी है तो ऐसे में मद्रास हाईकोर्ट के जज के. चंद्रू ने निश्चित तौर पर एक मिसाल पेश की है। लेकिन ऐसी मिसालें आज अपवाद स्वरूप ही सामने आती हैं। गाहे-बगाहे सामने आने वाली ये प्रेरक मिसालें कई बार सिर्फ प्रतीकात्मक होती हैं। अमुक अधिकारी ने सेवानिवृत्ति के तुरंत बाद अपनी सरकारी गाड़ी छोड़ दी या सरकारी बंगला खाली कर दिया। इस बात पर पर्दा ही रहता है कि अपने पद पर रहते हुए वे कितने पाक-साफ थे और निजी जीवन में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कितने प्रतिबद्ध रहे। आज ऐसी कोई भी मिसाल उस, उस क्षेत्र में सामने नहीं आती, जो आम आदमी को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है या आदमी, जिसे रोल मॉडल के तौर पर देखता है। राजनीति ऐसा ही एक क्षेत्र है। लाल बहादुर शास्त्री की ईमानदारी की बातें तो सभी करते हैं। लेकिन कोई उनके जैसी मिसाल पेश नहीं कर पाता। याद कीजिए, नेहरू के दौर को, जब उनके मंत्रिमंडल में ९० फीसद से ज्यादा मंत्री ईमानदार थे, आज स्थिति ठीक इसके विपरीत है। मौजूदा मंत्रिमंडल में एक फीसद नेता भी ईमानदर मिल जाएँ, तो गनीमत समझिए । बड़ा सवाल यह है कि क्या के. चंद्रू जैसे जजों से आज के नेता या अधिकारी कोई प्रेरणा लेंगे ? आज़ादी के बाद से भ्रष्टाचार के लगातार बढ़ते ग्राफ को देखते हुए तो ऐसा संभव नहीं लगता। आदर्शवादी मिसालें पहले भी सामने रही हैं। क्या उनसे किसी ने कोई सीख ली? लिहाज़ा ज़रूरत एक सुदृढ़ तंत्र और कड़े प्रवधानों की है, जो सर्वव्यापी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा सके।उसके अभाव में चंद्रू जैसी मिसाल अपवाद ही रह जाएगी। **- विकास वशिष्ठ**

गाय भैंसों की कमी से बढ़ी आत्महत्याएं : मेनका गांधी

किसानों के लिए उपयोगी गाय-भैंस जैसे मवेशियों को मारने से गोबर का उत्पादन कम हो रहा है। इसके चलते खेतों में अधिक मात्रा में रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति भी कम हो रही है। भूमि को अधिक से अधिक पानी की ज़रूरत पड़ रही है। यह किसानों की आत्महत्या का मुख्य कारण बन गया है।

यह कहना है पीपुल्स फॉर एनिमल की संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष मेनका गांधी का। वे नागपुर में शालेय स्तर पर करुणा क्लब की आवश्यकता उद्देश्य व महत्व पर बोल रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन पीपुल्स फॉर एनिमल व माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया था। उन्होंने बताया कि प्राणियों के प्रति विद्यार्थियों में संवेदना निर्माण करने के लिए विद्यालय स्तर पर करुणा क्लब की शुरुआत होनी ज़रूरी है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को पशु-पक्षियों से प्रेम करना, शाकाहारी बनने के महत्व, पेड़-पौधों के महत्व, दूसरों की सहायता करने जैसे संदेश दिए जाने चाहिए। इसके लिए विद्यार्थियों को अलग से अंक देने चाहिए। साथ ही सबसे उदार विद्यार्थी को नवाज़ा भी जाना चाहिए। शिक्षाधिकारी को चाहिए कि पेड़-पौंधों की ज़रूरत, उपयोग, प्रकार आदि पर आधारित पुस्तिका छपवाएं। साथ ही १ रुपए प्रति विद्यार्थी से जमा करवाकर अच्छे कार्य में लगाना चाहिए। विद्यालय में चमड़े के जूतों पर पबंदी लगानी चाहिए।

मोजों के माध्यम से चमड़े के जूतों से निकलने वाली गंदगी काफी ज़हरीली होती है, जो पानी के जीव-जंतुओं को मारती है। उन्होंने कहा कि किसी भी विद्यालय प्रशासन को चिड़ियाघर बनाने की इजाज़त नहीं है। इसके लिए उन्हें सेंटर ज़ू अइथॉरिटी से इजाज़त लेनी आवश्यक है। पशु-पक्षयों को मारने से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। इसका नुकसान ग्लोबल वार्मिंग के माध्यम से दिखाई दे रहा है। वर्तमान में कार्बन डायऑक्साइड से ज्यादा मिथेन गैस मनुष्य व अन्य जीव-जंतुओं के लिए घातक है। शहर में बनाए जाने वाले चिड़ियाघरों को बंद कर देना चाहिए। यहाँ न तो उन्हें सुरक्षा दी जाती है न ही आज़ादी। प्राणियों को मारने से कुछ प्राणियों की आज़ादी हो जाती है, तो कुछ प्राणियों की कमी, जो प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ती है।

वर्तमान में भारत में बाघों, गिद्धों और कुत्तों की संख्या में कमी देखी जा रही है। एक किलोग्राम मांस बनाने के लिए ११ किलोग्राम अनाज व ७०० लीटर पानी की आवश्यकता होती है। पिछले २०० वर्षों में २० प्रतिशत कार्बनडायऑक्साइड की वृद्धि हुई है, वहीं मिथेन में १४९ प्रतिशत की, जबकि मिथेन, कार्बन डाई ऑक्साइड से २३ गुना अधिक गर्मी पैदा करती है। ७० प्रतिशत मथिन जानवरों को मारने से बनती है।

एक भैंस के कटने से ६०० किलोग्राम, मुर्गी के कटने से ४० किलोग्राम,बकरे के कटने से २०० किलोग्राम मिथेन गैस बाहर निकलती है। इसे रोकने पर ४५० किलोग्राम मिथेन गायब हो सकती है । भारत और चीन मिलकर सबसे ज्यादा मिथेन का उत्सर्जन कर रहे हैं। सरकार कत्लखाने बनाने के लिए १०० प्रतिशत रियायत दे रही है। लेकिन प्राणियों के अस्पताल पर ध्यान नहीं है। मनुष्य अधिकतर माल ढुलाई जानवरों के माध्यम से करता है, लेकिन निर्यात व खाद्यों के रूप में इनका उपयोग बढ़ने की संख्या में भी अब गिरावट आ रही है। जानवरों से आज भी ढुलाई होने से महँगाई अब भी काबू में है। फरवरी माह में जंगलों में आग लगा दी जाती है, जो कि गलत है। इससे नए उगनेवाले पौधे भी जल जाते हैं।

उन्होंने अगले सत्र में महानगर पालिका के २१० विद्यालयों में करुणा योजना की शुरुआत करने की घोषणा की।

जीवन में नामुमकिन कुछ भी नहीं

राजर्षि जनक के आध्य.त्मिक उपदेश से सभासद बड़े प्रभावित हुए। सभी ने धरम एवं धार्मिक जीवन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इतने में एक सज्जन खड़े होकर बोल उठे, राजन मुझे गृहस्थी ने इस तरह बाँध रखा है कि मैं धर्म कार्य के लिए समय नहीं निकाल पाता। यह सुनकर सब चुप हो गए। तभी राजा जनक कहने लगे- सज्ञनों, मैं उठना चाहता हूँ, किंतु मुजे सिंहासन ने पकड़ रखा है। अब उन सज्जन का समाधान हो चुका था। विचार कोई ठोस वस्तु नहीं है। विचार अमूर्त है। अधिकांश व्यक्तियों का मानना है कि विचारों पर किसी का नियंत्रण नहीं हो सकता। कोई भी विचारों को अपनी इच्छा के अनुसार परिवर्तित नहीं कर सकता, इन्हें बदल नहीं सकता।

व्यक्तियों को लगता है कि मन की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करना निरर्थक है। कोई भी व्यक्ति हो, किसी भी प्रकार का हो, लेकिन उस व्यक्ति में इतना सामर्थ्य तो रहता ही है कि वह अपने मन की प्रवृत्ति को नियंत्रित कर सके। अपने क्रियाकलापों को बदल सके। अपने चरित्र में परिवर्तन ला सके। आवश्यकता है, तो सही सोच की, और उस दिशा में कार्य करने की।

दरअसल मनुष्य अपने स्वभाव से ही आलसी हैं। जब भी उसे कोई कार्य करना पड़ता है, और उसमें जैसे ही कठिनाइयाँ आती हैं, वह सोचने लगता है कि वह सब कुछ छोड़कर भाग जाएँ। ऐसा विचार करते ही वह जो चल रहा है, उसे ही चलने देता है।

शारीरिक भाषा की महानता

- पं. सत्यवीर शास्त्री

मनुष्य उत्पत्ति के पश्चात मानव से अशाब्दिक वार्तालाप करता था। मन में उत्पन्न होने वाले भावों को प्रकट करने के साधन पूर्ण विकसित भाषा है। जब भाषा विकसित नहीं हुई थी, तब व्यक्ति के चेहरे से उसके बैठने, उठने, चलने, बोलने के ढंग से हाथ-पैरों के इशारों से उसकी भावनाओं को समझा जाता था। इसे शारीरिक भाषा कहते हैं।

वर्तमान में शारीरिक भाषा की ओर नवयुवक-युवतियाँ आकर्षित हो रही हैं। क्योंकि मुलाकात, सामुहिक बहस, वक्तृत्व स्पर्धा वाद-विवाद, भाषण तथा नृत्य की परीक्षाओं में शारीरिक भाषा को प्राधान्य दिया जा रहा है। समयानुसार शारीरिक भाषा का प्रदर्शन करने वाले भाषाविदों से भी अपने कार्य में सफल होते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में भी शारीरिक भाषा अपना विशिष्ट प्रभाव रखती है। मनुष्य का चेहरा, आँखें, भाषण शैली, चाल-चलन ये शारीरिक भाषा के प्रमुख साधन हैं।

चेहरा : चेहरा मनुष्य के दर्पण है। व्यक्तित्व की पहचान चेहरे से होती है। उत्साह, निरुत्साह, राग-द्वेश, काम-क्रोध, चिन्ता,आनन्द की जानकारी चेहरे से होती है। चेहरे पर स्वाभाविक हँसी हो, तो मनुष्य आनंदी,जबकि निराशा या उदासी हो, तो दु:खी। आँखें लाल, चेहरा तमतमाया हुआ हो, तो क्रोधी समझा जाता है। दाँतों से नाखून काटने वाला, बैठे-बैठे पैर हिलाने वाला निराशा में लिप्त समझना चाहिए। सिर के बाल बाल-बार खींचने वाला आपत्ति में फँसा हुआ होता है। बार-बार गला साफ करने वाला अधिकार जमाना चाहता है। हाथ बाँधकर बैठने वाला, पैर पर पैर रखने वाला अपने विचारों को गोपनीय रखकर दूसरों का निरीक्षण करने वाला होता है। यह भी सच है कि

दिल के भाव बता देता है असली-नकली चेहरा।

स्वामी दयानंद सरस्वती भक्तों से घिरे हुए उँचासन पर विराजमान थे। एक ब्राह्मण बहुत बडा मिठाई का पैकेट लेकर स्वामीजी के पास घबराकर आकर बोला, महाराज केवल मिठाई आपके लिए ही है। ऐसा कहकर वह लौट गया।

स्वमीजी ने भक्तों से कहा, ‘इसके चेहरे से ऐसा अनुमान है कि यह कोई दु:साहस् करने का प्रयास कर रहा है। इसने मिठाई में कोई ज़हरीली चीज़ मिलाई है। एक भक्त ने कहा, ‘यह सत्य कैसे जानें? स्वामीजी ने कहा, आप लोगों को अभी दिखलाते हैं। ऐसा कहने पर उन्होंने वही पेढ़ा कुत्ते को डाला। कुत्ते ने पेढ़ा खा लिया। पाँच मिनट बाद कुत्ता रोने-चिल्लाने लगा। उठ खड़ा होता, फिर गिर पड़ता। इस दृश्य को देखकर भक्त बड़े अचरज में पड़े। स्वामीजी ने कुत्ते को फिर कुछ औषधि खिलाई, जिससे कुत्ता आधे घंटे बाद स्वस्थ हो गया। स्वामीजी ने चेहरे से जो अनुमान लगाया था, वह सच था।

भाषण शैली : भाषण देते समय खड़े रहने, बैठने, आगे-पीछे होने के तरीकों को भी शारीरिक भाषा कहते हैं। वक्ता सीधा खड़ा रहकर भाषण देता है, तो वह सतर्कता से बोलने वाला, विद्वान होता है। बोलने वाला विषयानुरूप संपूर्ण सभा को अपनी ओर हाव-भावों से आकर्षित कर लेता है, तो समझना चाहिए कि वह विषय में निष्णात है। मनुष्य की शारीरिक गति-विधियाँ भी उसकी आंतरिक दशा का दिग्दर्शन कराती है। जैसे धीरे-धीरे चलने वाला आरामदायी होता है। हाथ आगे-पीछे हिलाते हुए चलने वाला ध्येयवादी होता। जेब में हाथ डालकर चलने वाला समीक्षक। हाथ पीठ के पीछे बाँधकर चलने वाला स्वयं के लिए सोचने वाला होता है।

हाथ : हाथों की उंगलियाँ, कंधा, आँखों की हलचल भी शारीरिक भाषा है। इन्हीं अंगों की विशिष्ट हलचल से वक्ता अपने विचारों से श्रोताओं को अवगत कराता है। हलचल न करने वाले वक्ता को समझना कठिन है। विषयों के अनुसार अंग प्रदर्शन करने वाला वक्ता सफल होता है। नृत्य में जनता समरस इसलिए होती है कि नर्तक प्रसंगानुरूप अंग प्रदर्शन कर शारीरिक भाषा से जनता को प्रभावित कर लेता है। शारीरिक भाषा का सर्वोत्तम उदाहरण ‘लोकनाट्य’ या ‘तमाशा’ है।

आँखों का प्रदर्शन : देश, भाषा का ज्ञान नहीं । कोई जान-पहचान नहीं, पहले कभी एक-दूसरे को स्वप्न में भी देखा नहीं। फिर भी जब नजरों से नज़र मिल जाती है, तो तौबा मच जाती है। यह शारीरिक भाषा का जबरदस्त प्रभाव है। मनुष्य की आँखें विविध भावनाँ प्रकट करती हैं। आनंद, उत्साह, निराशा, क्रोध आदि भाव आँखों से पहचाने जाते हैं। सीधी आँखें और खुले होंठ प्रसन्नता के सूचक होते हैं। लाल आँखें, तनी भौंहे क्रोध का दिग्दर्शन कराती हैं। नीची आँखें, उदास चेहरा कमज़ोरी दर्शाती हैं।

भारत वर्ष में शासन मान्य भाषाएँ एवं शतशः बोलियाँ बोली जाती हैं। यह असंभव है कि`क व्यक्ति इतनी सारी भाषाओं, बोलियों को अवगत करा सकें। यदि हम शारीरिक भाषा को अवगत कर लेते हैं, तो हर भारतीय भाई-बहनों के भावों-विचारों को समझकर सामंजस्य बनाकर जीवन सुखी बना सकते हैं।

शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचंद्र देहलवी के रोचक संस्मरण

- श्री राधे मोहन

एक बार श्रद्धेय पण्डित रामचन्द्र देहलवी को हैदराबाद आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर जाना हुआ। वहाँ उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि उर्दू भाषा बिना हिन्दी भाषा के बोली नहीं जा सकती है। निज़ाम सरकार के गुप्तचर विभाग ने इसकी रिपोर्ट शासन को दी। शासन के उच्च अधिकारियों ने उर्दू भाषा के अपमान स्वरूप पण्डितजी के व्याख्यान पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसकी सूचना आर्य समाज के मंत्री को प्रेषित कर दी। मंत्रीजी घबरा गये और पूछा कि प्रतिबन्ध का कारण क्या है ? मंत्रीजी ने बताया कि प्रतिबन्ध का कारण उर्दू भाषा का अपमान बताया गया है। पण्डितजी ने कहा एक स्लेट मंगवाइये, जिससे सारी बातें स्पष्ट हो जाएं। स्लेट तुरंत आ गया। पंडितजी ने उनसे कहा कि स्लेट पर लिखिए आलिफ आर बे तथा आगे लिखिए हे और मीम। पण्डित जी ने उनसे कहा कि आप इसे पढें। उन्होंने पढ़ा 'एब हम' पंडितजी ने तत्काल कहा कि आपने जो लिखा है, उसे पढ़िए। आपने अलिफ लिका, तो आलिफ पढ़िए और बे को बे, हे को हे और मीम को मीम पढ़िए। अब यह तो हिन्दी का उच्चारण है। पंडितजी ने कहा कि आपकी लिपि तो उर्दू है, लेकिन उच्चारण तो हिन्दी का है। उर्दू भाषा में जैसा लिखा है, वैसा तो हम बोल भी नहीं सकते हैं। पण्डितजी ने कहा कि यही तो मैंने कहा था। वे बड़े ज़ोरों से ठठाकर हँसे और कहा- जाइए, आपका व्याख्यान होगा। प्रतिबंध हट गया और पण्डितजी का व्याख्यान जोर-शोर से शुरू हुआ। एक बार मौलवी साहब ने पण्डितजी से कहा कि आपकी भाषा हिन्दी अथवा संस्कृत उसके गन्दगी से अर्थात जिस ओर से आप आबदस्त लेते हैं, उस ओर से होता है। जबकि हमारी भाषाओं की पैदाइश दाहिनी ओर से होती है। पण्डितजी ने उत्तर दिया, 'हाँ मौलवी साहब। आप ठीक कहते हैं हमारी भाषाओं का जन्म गंदगी से होता है, लेकिन वे सफाई की ओर बढ़ती जाती हैं और यदि गंदगी की ओर आना भी पड़ा, तो भी वे सफाई की ओर ही बढ़ती रहती है और उसका अंत सफाई में ही होता है। आपकी भाषाओं का यह हाल है कि उसकी पैदाइश सफाई में होती है, लेकिन उसका रुझान गंदगी की ओर होता है। और यदि सफाई की ओर आ भी गई, तो बहुत तेज़ी के साथ गंदगी की ओर भागती है और उसका अंत गंदगी में ही होता है। मौलवी साहब बहुत लज्जित हुए और कुछ कह नहीं पाए।

श्रद्धेय पण्डितजी की स्वभाव अपने शिष्यों से भी स्नेहिल हुआ करता था। एक दिन वे शास्त्रार्थ महारथी ओमप्रकाश शास्त्री (खतौली) के निवास स्थान पर अचानक पहुँच गये। श्रद्धेय शास्त्रीजी ने आदर के साथ पण्डितजी का अभिवादन किया, किन्तु ये कहा कि गुरुजी मैं आपको अपने यहाँ ठहरा नहीं सकता हूँ। पण्डितजी ने कहा, 'ऐसा क्यों ? उन्होंने कहा कि मुझे डिसेन्ट्री है। बार-बार बहुत पतले दस्त होते हैं। इसलिए शौचालय बहुत गंदा हो गया है। इसलिए मुझे मना करना पड़ रहा है। पंडितजी ने अपना अचकन उतारा और पूछा कि कहाँ है तुम्हारा शौचालय ? उन्होंने शौचालय की ओर इंगित किया। पंण्डितजी ने तत्काल पानी से भरी बाल्टी को उठा लिया और शौचालय की ओर जाना चाहा, तो ओमप्रकाशजी ने पंण्डितजी के पैर पकड़ लिये और कहा, गुरु मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करने दूँगा। अन्ततोगत्वा पण्डितजी को उनकी प्रार्थना को स्वीकार करना पड़ा। यह सर्व विदित है कि पंडितजी स्वभाव से अत्यंत सफाई पसंद थे। पण्डितजी जहाँ बी और जिस कमरे में अतिथि के रूप में ठहरते थे, उस कमरे को अच्छी प्रकार से साफ रखते थे। पण्डितजी अपने वस्त्रों को भी स्नान के समय नित्यप्रति दो लेते थे। यौनावस्था में ही उनकी पत्नी का देहांत हो जाने पर उन्होंने अपना पुर्विवाह नहीं किया और शेष जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सिद्धांतों से कभी भी समझौता नहीं किया। एक बार २ अक्तूबर गाँधी जयंती के जन्मदिन पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं अन्य राजनीतिक नेता तथा गाँधीजी के भक्त गाँधीजी के समाधि स्थल पर परम्परानुसार पुष्पांजलि अर्पित करने पहुँचे। पण्डितजी भी श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले राजनेताओं की पंक्ति में खड़े हो गए। सरकारी माली ने पण्डितजी के हाथों में फूल देना चाहा, तो पण्डितजी ने कहा, 'आई एम नॉट फूल' माली भौंचक्का रह गया और उसने कहा, क्या ये सब लोग बेवकूफ हैं? पंडितजी ने तत्काल उत्तर दिया, 'मैंने अपने संबंध में उत्तर दिया। बाकी वे लोग स्वयं जानें। पण्डितजी समाधि तक तो आये, लेकिन उन्होंने समाधि पर फूल नहीं चढ़ाया।

पण्डितजी स्वभाव से विनोदप्रिय थे। एक बार एक बार उनके चिर-परिचित मुस्लिम दरोगाजी अपने दो सिपाहियों के साथ कृष्ण मंदिर के चबुतरे पर बैठे थे। पण्डितजी ने हँसते हुए कहा कि वाह मौलानाजी आप भी बुत परस्ती की शरण में आ ही गये। दरोगाजी भी पण्डितजी की भाँति विनोदी स्वभाव के थे। उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं पंडितजी, मैं तो यहाँ राधाजी की नथुनी चोरी हो गई है, उसकी तहकीकात करने आया हूँ। पण्डितजी ने पूछा,'कुछ पता चला ? दरोगाजी ने कहा, 'कुछ नहीं पता चला।' उनसे बार-बार पूछते हैं, लेकिन वे कुछ बोलते ही नहीं। पण्डितजी ने कहा, 'आप कानून की धाराओं से अच्छी तरह से वाकिफ हैं। जो व्यक्ति अपराधी को देखते हुए उस पर चुप्पी साधे रहे, तो उसे आप अरेस्ट क्यों नहीं करते? दरोगाजी ने हँसते हुए कहा कि पण्डितजी इनको गिरफ्तार कर ले जाएँ, तो वहाँ भी ताले में बंद करना पड़ेगा और यहाँ भी ताले में बन्द है। इस उत्तर-प्रति उत्तर से पण्डितजी और मौलवी साहब दोनों ठहठहाकर हँस पड़े और सुनने वाले भी प्रफुल्लित हो गए।

आर्य समाज चौक के वार्षिकोत्सव पर यह परम्परा रही है कि समागत विद्वानों का आतिथ्य करने के लिए जो सज्जन भोजन करना चाहते हों, वे ले जा सकते थे। मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे भी श्रद्धेय पण्डित रामचंद्र देहलवी, पण्डित शान्ति प्रकाशजी, श्री ओमप्रकाश शास्त्री, महात्मा आर्यभिक्षु, श्रीमती सावित्री शर्मा, स्वामी ब्रह्मानंदजी, ओमप्रकाश शर्मा, स्वामी ब्रह्मानंदजी, ओमप्रकाश वर्मा, ठाकुर महिपाल सिंह, ज्वलन्तकुमार शास्त्री, आदि विद्वानों को अपने निवास पर बुलाकर उनके पादप्रक्षालन का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ।

सांस्कृतिक पतन

- *राजेंद्र प्र. आर्य*

२ फरवरी १८३५ को लॉर्ड मेकाले ने ब्रिटिश संसद में एक वक्तव्य दिया था, जो इस प्रकार है-

मैंने पूरे भारत वर्ष में चारों ओर भ्रमण किया है और अपने भ्रमण काल के दौरान हमने एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा, जो भिकारी अथवा चोर हो। इस देश में इतनी सम्पदा है कि यहाँ के लोगों का चरित्र इतना ऊँचा है और लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं समझता कि इन्हें गुलाम बनाया जा सकता है। जब तक कि इस देश की रीढ़ की हड्डी को तोड़ नहीं दिया जाए, जो इसक देश की आध्यात्मिक व पैतृक सम्पत्ति है और इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि उसकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा उसकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा उसकी संस्कृति को बदल दें। ताकि वह यह सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी व आंग्ल है, वह उनसे अधिक महान है। इस प्रकार वे अपना स्वाभिमान और अपनी स्वाभाविक संस्कृति को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे गुलाम बन जायेंगे।

अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक अंग्रेज अफसर रावटे क्लाइव ने १७६० ईसवीं में कलकत्ता में गौयों की हत्या हेतु एक कत्लखाना खुलवाया, जबकि मुगल काल में भी इस देश में गो हत्या नहीं होती थी और इस एक कत्लखाने से बढ़कर अंग्रेजों के शासनकाल में ३०० कत्लखाने खुल गये। और आज जब हमारी सरकार है, तो इस समय देश में हज़ारों की संख्या में रजिस्टर्ड कत्लखाने हैं, शायद ३६००। और भारत गौमांस का निर्यात करने वाला प्रमुख देश बनकर ढेर सारी विदेशी मुद्राएँ अर्जित कर रहा है। एक आकलन के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग १ करोड़ गायों की हत्या की जा रही है। और लगभग इतनी ही गायें बांग्लादेश को भेजी जा रही हैं। वहीं दूसरी ओर स्थिति यह है कि दूध के अभाव में बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। इस देश में प्रत्येक १ मिनट में ५ वर्ष तक के ३ बच्चों की मौत कुपोषण के कारण हो जाती है। अर्थात् प्रत्येक १ घंटे में १८० और प्रतिदिन लगभग ४३२० बच्चे।

दूसरा काम रावर्ट क्लाइव में हमारे नैतिक पतन के उद्देश्य से कलकत्ता में ही एक विदेशी शराब की दुकान खुलवाई, इसके पहले अंग्रेज़ लोग ही सिर्फ अपने ही वास्ते विदेश से इसे मँगवाते थे। इस समय इस देश में लगभग ३-४ लाख तक विदेशी शराब की दुकानें हैं, जिससे करोड़ों लोग खराब खरीदकर अपना जीवन और जवानी दोनों ही बर्बाद कर रहे हैं। इस शराब की वजह से लाखों घर बर्बाद हो चुके हैं और लाखों लोग बीमारियों से ग्रस्त होकर असमय ही मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग १ लाख ४० हज़ार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं। जिसका मुख्य कारण होता है शराब।

अभी भी होली में सिर्फ उत्तर बिहार में ५८ व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं में मारे गये हैं, वहीं ५०० लोग गंभीर रूप से घायल घायल हुए, जिसका कारण भी रहा है शराब, पता नहीं पूरे देश की स्थिति क्या रही होगी।

अंग्रेज़ों ने हमारे नैतिक पतन के ही उद्देश्य से एक और काम करके अपनी सारी हदें पार कर दी हैं और वह है कलकत्ता में ही एक वेश्यालय की स्थापना। और इस वेश्यालय में करीब २०० महिलाओं को जबरन इस पेशे में उतारा गया। आज इसका स्वरूप इतना विसाल हो गया है कि इस देश में इस समय करीब २० लाख से भी अधिक वेश्याएं हैं और कॉलगर्ल्स की संख्या तो अलग है। सोचा जा सकता है कि रॉवर्ट क्लाइव को इतनी सफलता मिली है अपने मंसूबों में। ये वेश्याएं लोगों को यौन रोगी बनाकर उसे असमय मृत्यु की ओर ढकेल रही हैं।

आज इस देश में ५५ लाख से भी अधिक लोग एड्स से ग्रस्त होकर जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं।

आज वास्तव में हमारी सनातन वैदिक संस्कृति को नष्ट कर अंग्रेज़ों ने हमारी रीढ़ की हड्डी ही तोड़ डाली है, तभी तो हमें अपना कुछ भी अच्छा नहीं लगता और विदेशी चीज़ें हमें श्रेष्ठकर लगती हैं, जिस वजह से तेज़ी से हम उसे अपना रहे हैं। विदेशी पहनावे और खान-पान की सिर्फ बात नहीं है। हमें विदेशी भाषा, विदेशी शराब, विदेशी सभ्यता, विदेशी कारें, विदेशी कुत्ते, और यदि हम यह कहें, तो शायद गलत नहीं होगा कि अगर विदेशी में हर किसी को उपलब्ध हो सके, तो देशी बहुओं को कोई पूछेगा भी नहीं। विदेशी सभ्यता के आकर्षण ने हमें प्रायः सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है। ज़रा इसे देखे-

१. खान-पान और पहनावा -

विदेशी सभ्यता ने सर्व प्रथम हमारे खान-पान और पहनावे पर डाका डाला है। हम अपने पारम्परिक पहनावे को छोड़कर विदेशी पहनावे सूट-बूट पहनने में गौरवान्वित होते हैं। लड़कियों पर तो इसका प्रभाव नारी गरिमा पर प्रश्नचिह्न ही लगा दिया है। उत्तेजक, भड़काऊ, तंग और फूहड़ पहनावे में ये बालाएं खुलेआम नग्नता और अश्लीलता का प्रदर्शन कर रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में योन अपराधों में जो बेतहाशा वृद्धि हुई है, उसका एक कारण अश्लीलता भी है। इसे देखकर लगता है कि इनके अभिभावकों की भी इसमें मौन स्वीकृति है, अथवा वे मजबूर हैं।

खान-पान में भी हमारा पारम्परिक सात्विक आहार रास नहीं आता है और मांस, मछली, अंडा, मुर्गी और शराब को हम तेज़ी से अपना रहे हैं। इस अभक्ष्य आहार और शराब के सेवन की वजह से ही हमारी रोग निरोधक क्षमता तेज़ी से घट रही है, जिस वजह से हम रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। आज ६०-६५ में ही लोग जाने की तैयारी करने लगते और ७०-७५ वर्ष में चले भी जाते हैं। जबकि ईश्वर ने हमें १०० वर्ष जीने के लिए अधिकृत किया है। और अंतिम कुछ वर्ष में हम घर में अथवा अस्पताल में मृत्यु शय्या पर गुज़ारते हैं।

२. भाषा पर कुठाराघात : -

आज अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने में हम अपनी शान समझते हैं। अगर अंग्रेज़ी हमें ठीक से नहीं आती, तो अंग्रेज़ी शब्दों का हम अधिक से अधिक प्रयोग कर अपने को अधिक एडवांस समझते हैं । यह अंग्रेज़ी शिक्षा का ही प्रभाव है कि बच्चे भी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

इस ज़माने में आदर्शवाद

- राजकिशोर

कहते हैं किसी ज़माने में चाणक्य नाम का एक आदमी हुआ था, जिसने ए असाधारण-से चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनने की प्रेरणा दी। और इसके लिए उसका मार्गदर्शन भी किया मगध के इस राजा को हराकर जब चंद्रगुप्त सिंहासन पर बैठा, तब उसने चाणक्य को अपना प्रधानमंत्री बनाया। चाणक्य के बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा यह है कि कोई व्यक्ति शाम के समय उनसे मिलने आया। चाणक्य उस समय कोई सरकारी काम कर रहे थे। इसलिए उन्होंने आगंतुक को इंतज़ार करने को कहा। जब काम खत्म हो गया, तब चाणक्य ने वह दिया बुझा दिया, जिसकी रोशनी में वह काम कर रहे थे। फिर उन्होंने एक और दिया जलाया और आगंतुक से बात करने लगे। आगंतुक ने जानना चाहा कि चाणक्य ने पहला दिया क्यों बुझा दिया था, क्योंकि रात होने जा रही थी और रोशनी की ज़रूरत बनी हुई थी। चाणक्य ने बड़े संकोच के साथ जवाब दिया कि उस दिये में सरकारी खाते से तेल डाला गया था, इसलिए इसकी रोशनी में सिर्फ सरकारी काम किया जा सकता था। जब सरकारी काम खत्म हो गया और वे निजी ज़िंदगी में वापस आए, तो उन्होंने अपना दिया जला लिया। सरकारी कर्मचारी को सरकारी खर्च पर अपना निजी काम करने का कोई अधिकार नहीं है।

यह घटना लगभग ढाई हज़ार साल पहले की है। क्या वैसी घटना आज के ज़माने में भी हो सकती है? क्यों नहीं हो सकती? नैतिकता कोई ऐसा फूल नहीं है, जो किसी खास मौसम में खिलता हो। हम यहाँ ऐसे एक व्यक्ति के बारे में बात करेंगे, जो कई दिन पहले ही मद्रास उच्च न्यायालय से जज के पद से रिटायर हुए हैं। उनका नाम है के. चंद्रू। जिस दिन वह रिटायर हुए, उसी सुबह उन्होंने सरकारी कार लौटा दी। और लोकल ट्रेन में बैठकर अपने घर चले गए। दिल्ली के मुख्यमंत्री साहब सिंह वर्मा ने भी ऐसा ही किया था। इस पद से इस्तीफा देने के लिए वह सरकारी गाड़ी में कार्यालय आये थे। और इस्तीफा देने के बाद दिल्ली सरकार की कार में बैठकर घर गए। जब चंद्रबाबू ने ऐसा ही किया, तो यह कोई

ढाई हज़ार साल पहले हुए थे चाणक्य। एक विराट आदर्श व्यक्तित्व। आज नैतिक पतन के युग में उनके जैसा आदर्शवादी व्यक्तित्व तो सामने नहीं आता, लेकिन मद्रास हाईकोर्ट के एक जज ने इस ज़माने में आदर्शवाद की एक मिसाल पेश की है। यदि लोकतंत्र के सभी स्तंभ वैसी ही नैतिकता का पालन करने की इच्छाशक्ति अपने भीतर पैदा कर लें, तो एक बार फिर वैसे ही आदर्श स्थापित किये जा सकते हैं।

नाटकीय दृष्य नहीं था। वह जज के रूप में शुरू से ही ऐसे ही रहे हैं।

आदर्श जीवन की प्रतिमूर्ति

चंद्रू के आदर्शमय जीवन के जो पहलू सामने आए हैं, वे सभी उन्हें श्रद्धा के साथ प्रणाम करने को प्रेरित करते हैं। मसलन उन्होंने लाल चपरास लगाए हुए चोबदार की माँग नहीं की, जो अदालत में जज के आने की घोषणा करता है। 'बामुलाहिजा होशियार' की शैली को वह सामंती शासन का लक्षण मानते हैं। इसी तरह उन्होंने अपनी गाड़ी पर लाल बत्ती कभी नहीं लगाई, जिसके लिए दूसरे लोग मरे जाते हैं। जज चंद्रू को निजी सुरक्षा के लिए एक सब इन्सपेक्टर मिला था। उसे यह कहकर लौटा दिया गया कि उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। जजों को माई लार्ड का संबोधन बहुत पसंद है। ब्रिटिश काल में अंग्रेज़ जजों को किसी और तरह संबोधित नहीं किया जा सकता था, नहीं तो न्यायालय की अवमानना हो जाती है। अमेरिका में बहुत दिनों से मिस्टर जज का संबोधन चल रहा है, लेकिन स्वतंत्र भारत में जजों ने माई लार्ड को रुख्सत करने की ज़रूरत नहीं समझी। हमारे इस जज ने अपनी अदालत में माई लॉर्ड के प्रयोग पर पाबंदी लगा दी।

जज चंद्रू के कुछ उल्लेखनीय फैसले

इतना ही नहीं, कुछ और भी है। जज साहब के सरकारी चैंबर के बाहरएक नोटिस लगा रहता था। 'कोई देवता नहीं, कोई फूल नहीं, कोई भूखा नहीं,कोई फल न लाएं। स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार और शिष्टाचार के बीच के फर्क को मिटाने वाले मामूली उपहार भी उन्हें नापसंद थे। छोटे रास्तों से ही बड़े रास्ते खुलते हैं। सभी जजों और उच्च अधिकारियों को अच्छा लगता है कि रिटायरमेंट के बाद उनका जबरदस्त विदाई समारोह हो। कौन है, जो किसी विदाई समारोह में किसी की तारीफ के पुल बाँधने के साथ-साथ उसकी कुछ सच्ची आलोचना भी कर सके? लेकिन, जज चंद्रू ने विदाई समारोह के लिए एकदम मना कर दिया। बताते हैं कि विदाई समारोह के लिए मना करने का निर्णय १९२९ के बाद यह पहली बार है। जब यह तय हुआ कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के सभी जज अपनी संपत्ती का विवरण प्रधान न्यायाधीश को देंगे। तब जज चंद्रू ने तुरंत यह विवरण जमा करवा दिया। रिटायर होकर न्यायालय छोड़ने के पहले भी उन्होंने अपनी संपत्ती के ब्योरे दाखिल कर दिये, जो एक अनोखी घटना है। जो जज निजी जीवन में जितना पाक-साफ होता है, उसके फैसले भी उतने ही रैडिकल होते हैं। जज चंद्रू के कुछ उल्लेखनीय फैसले इस प्रकार हैं-

औरतें भी मंदिरों में पुजारी बन सकती हैं। श्मशान या कब्रगाह सभी जातियों के लिए एक होने चाहिए। नाटक करने के लिए पुलिस की अनुमति लेना आवश्यक नहीं है। मध्याह्न भोजन के केंद्रों में समुदाय आधारित आरक्षण होना चाहिए, आदि। आश्चर्य की बात यह है कि यह सब इसी ज़माने की बात है, जिसे नैतिक पतन का युग माना जाता है। कहा जाता है कि लोग बेइमान नहीं होते, उन्हें बेइमान बनाया जाता है। कहा यह भी जाता है कि अगर आप बेइमानों की टोली में शामिल नहीं होंगे, तो आपको जाने नहीं दिया जाएगा, लेकिन मद्रास हाईकोर्ट के न्यायाधीश चंद्रू ने एक जज का आदर्श जीवन जीकर और हर एक प्रलोभन को ठुकराकर यह साबित कर दिया कि बुरे से बुरे समय में भी अच्छी से अच्छी जिंदगी बिताना संभव है। एक कविता की पंक्ति है- कुछ कर गुज़रने के लिए मौसम नहीं, मन चाहिए। जब हममे यह जज्बा होगा कि जो किसी ज़माने भी संभव नहीं है, तब कोई भी त्याग कोई भी संयम, कोई भी शालीनता असंभव नहीं जान पड़ेगी। हर असंभव संभव होगा।

जलवायु परिवर्तन के भंवर में फँसी धरती

- रोहित कौशिक

जल-वायु परिवर्तन के मुद्दे पर विकसित और विकासशील देशों के बीच आपसी तनातनी के बीच पिछले दिनों हुए एक अध्ययन में पता चला है कि इस दौर में पिछले ११,३०० सालों के मुकाबले धरती का तापमान सबसे अधिक है। और तापमान बढ़ने की यह प्रक्रिया अभी रुकी नहीं, बल्कि जारी है। इस अध्ययन में संसार के ७३ शहरों के आँकड़ों का जायज़ा लिया गया। वैज्ञानिकों ने इन आंकड़ों के माध्यम से हिमयुग की समाप्ति से लेकर इस दौर तक धरती के तापमान की रूपरेखा तैयार की। इलके आधार पर अनुमान लगाया गया कि धरती पिछले ११,३०० साल के लगभग ८० पीसद काल में जितनी गर्म थी, उससे कहीं ज्यादा गर्म आज है। यह अध्ययन ओरेगन स्टेट विश्व विद्यालय के कॉलेज ऑफ अर्थ ओशन एवं एटमोसफेरिक साइंसेज में सम्पन्न हुआ। इसको सम्पन्न करने वाले मुख्य वैज्ञानिक शान मारकोट के अनुसार धरती पिछले २००० साल की तुलना में सबसे ज्यादा गर्म है। धरती का तापमान लगातार बढ़ने के कारण ही अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड के बाद विश्व में बर्फ के तीसरे सबसे बड़े भंडार माने जाने वाले कनाड़ा के ग्लेशियरों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अगर यही हाल रहा, तो इन ग्लेशियरों के पिघलने से दुनिया भर के समुद्र का जलस्तर बढ़ जाएगा। जियो फिजीकल रिसर्च लेटर्स नामक शोध-पत्रिका में प्रकाशित एक आलेख में कुछ ऐसी ही चिंताएँ प्रकट की गई हैं। नीदरलैंड और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने इस शोध-पत्रिका में दावा किया है कि जल-वायु की परिवर्तन तीव्रता को देखते हुए इन ग्लेशियरों के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगना तय है।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस सदी के अंत तक इन ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्रों के जलस्तर में दो सेंटीमीटर की वृद्धि हो सकती है। इस दौरान जलस्तर में कुल मिलाकर १८ से ५९ सेंटी मीटर की वृद्धि होगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस दौर में अंटार्कटिका के ग्लेशियरों पर काफी शोध एवं अध्ययन हो रहा है, लेकिन हमें कनाडा के ग्लेशियरों पर शोध करना चाहिए। अगर हम कनाड़ा के ग्लेशियरों के अध्ययन को नज़रंदाज़ करेंगे, तो निश्चित रूप से इसके दुष्परिणाम भुगतने होंगे। दरअसल पिछले कई वर्षों में जिस तरह से क्योटो प्रोटोकॉल की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं, उसने स्थिति को और अधिक भयावह बना दिया है। ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारक कार्बन उत्सर्जन के मामले में विकसित देश किसी भी कीमत पर बराबरी का सिद्धांत अपनाने के लिए विकसित देशों द्वारा तरह-तरह के बहाने ढूँढ लिये जाते हैं।

इसके अनुसार अधिक ग्रीन हाऊस गैसें पैदा करने वाले विकसित देशों को उत्सर्जन में कटौती की जिम्मेदारी भी ज्यादा उटानी चाहिए। भारत का मानना है कि ऐसे विकासशील देश, जो लगातार विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, निश्चित रूप से पहले से अधिक कार्बन उत्सर्जन कर रहे हैं। फिर भी इन देशों को विकसित देशों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता। अतः विकाससील दोश, जो लगातार विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, निश्चित रूप से पहले से अधिक कार्बन उत्सर्जन कर रहे हैं। फिर भी इन देशों को विकसित देशों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता। अतः विकाससील देशों को कार्बन उत्सर्जन में थोड़ी छूट अवश्य दी जानी चाहिए। समस्या यह है कि विकसित देश उत्सर्जन कटौती की जिम्मेदारी से बचकर यह जिम्मेदारी विकासशील देशों पर थोपना चाहते हैं। इस संदर्भ में कुछ देश विभिन्न मंचों से भारत को बदनाम करने का कोई मौका नहीं चूकना चाहते.लेकिन पिछले दिनों प्रकाशित नए अध्ययन में पेश आंकड़ों में कहा गया है कि भारत पिछले साल कार्बन उत्सर्जन पर काबू पाने में चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसी अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले कहीं ज्यादा सफल रहा है। चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ को साल के सबसे बड़े प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों के रूप में बताया गया है।

ब्रिटेन के ईस्ट एंजलिया विश्वविद्यालय के ग्लोबल कार्बन परियोजना नाम से जारी अध्ययन में पता चला है कि इस साल के दौरान चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ के वैश्विक उत्सर्जन में क्रम से २८, १६ और ११ फीसद की हिस्सेदारी है। जबकि इस बारे में भारत का आंकड़ा महज़ सात फीसद है। अध्ययन के नतीजे नेचर क्लाइमेट चेंज एंड अर्थ सिस्टम साइंस डाटा जर्नल में प्रकाशित किए गए हैं। इसमें बताया गया है कि प्रतिव्यक्ति उत्सर्जन के मामले में भारत की हिस्सेदारी १.८ टन है, अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन जैसी अर्थव्यवस्थाओं से काफी कम है। इनकी प्रतिव्यक्ति हिस्सेदारी क्रम से १७.२ टन, ७.३ और ६.६ टन है। हालाँकि भारत का उत्सर्जन बढ़ने वाला है, इसलिए इसमें किसी तरह का बदलाव उत्सर्जन में ज्यादा वृद्धि दर को प्रर्शित करेगा।

भारत और चीन दोनों ही विकास के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं, अतः उनका उत्सजन बढ़ने वाला है। लेकिन इनकी तुलना विकसित देशों के कार्बन उत्सर्जन से नहीं की जा सकती। हाल ही में विश्व बैंक ने भी चेतावनी दी कि यदि जल-वायु परिवर्तन पर समय रहते काबू नहीं पाया गया, तो दुनिया से गरीबी कभी खत्म नहीं होगी। विश्व बैंक ने दुनिया की अर्थव्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के संबंध में जारी रिपोर्ट में कहा है कि औद्योगिक प्रदूषण के कारण इस शताब्दि के अंत तक धरती का तापमान चार डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा, जिससे भीषण गर्मी के साथ ही वैश्विक खाद्यान्न उत्पादन में भारी गिरावट और समुद्र का जलस्तर बढ़ने से करोड़ों लोग प्रभावित होंगे। विश्व बैंक के अध्यक्ष किम योंग जिंग के अनुसार जल-वायु परिवर्तन पर हर हाल में काबू पाना होगा। तापमान में चार डिग्री सेल्सियस की वृद्धि को हर कीमत पर रोकना होगा। विकास की राह में यह सबसे बड़ी चुनौती है। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से बांग्लादेश, मिस्र, वियतनाम और अफ्रीका के तटवर्ती क्षेत्रों में खाद्यान्न उत्पादन को तगड़ा झटका लगेगा। जबकि दुनिया के अन्य हिस्सों में सूखा कृषि उपज के लिए भारी तबाही मचाएगा। इससे दुनिया में कुपोषण के मामलों में वृद्धि होगी।

इसके साथ ही उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में तूफान और चक्रवातों का प्रकोप बढ़ेगा। ये समस्याएँ दुनिया की गरीबी को कभी खत्म नहीं होने देंगी। इस रिपोर्ट में पर्यावरण प्रदूषण के कारण तापमान में वृद्धि के लिए मानवीय गतिविधियों को सबसे ज्यादा है ईंधन के रूप में कोयले का इस्तेमाल सबसे बड़ा खतरा है।

हमें समझना होगा कि जब तक विकसित देश खोखले आदर्शवाद की परिधि से बाहर नहीं आएंगे, तब तक जलवायु परिवर्तन के किसी भी मुद्दे पर कोई एक राय नहीं बन पाएंगी और यह हमारे अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा संकट है।

जन्मदिन पर आधारित भेदभाव समाप्त हो

- मनमोहन कुमार आर्य

यह संसार, जिसमें सूर्य, चंद्र, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, आकाश, आदि नाना प्रकार के भौतिक पदार्थ हैं। यह न सदा बने हुए हैं, न अतीत में मनुष्यों द्वारा बनाये गये हैं। मनुष्य इन्हें बना भी नहीं सकते। यह ब्रह्माण्ड सर्वत्र विद्यमान एक सर्वव्यापक चेतन सत्ता के द्वारा बनाये जाने पर अस्तित्व में आया है। इस संसार की रचना का तर्क व बुद्धिसंगत उत्तर हमें वेद एवं वैदिक साहित्य में विस्तार से मिलता है। इस भोतिक जगत में मनुष्य के साथ ही पशु-पक्षी, कीट, पतंग आदि जैविक सृष्टि भी विद्यमान है। जिन्हें यद्दपि माता-पिता जन्म देते हैं, परंतु सबके शरीरों का निर्माण उसी सर्वव्यापक चेतन तत्व अर्थात ईश्वर के द्वारा होता है। हमारी यह पृथिवी अति विस्तृत है। इसका व्यास १२,७०० किमी है और इसकी परिधि लगभग ४०,०७५ किमी तथा इसका क्षेत्रफल ५,१०,०६५ वर्ग किमी है। अब यह मानकर कि यह संसार ईश्वर ने बनाया है, तो उसका इसे बनाने का प्रयोजन क्या था, इसका ज्ञान होना आवश्यक है। ईश्वर ने यह संसार इसलिए बनाया है, कि वह इसे बना सकता है और इसे चला सकता है जैसा कि यह सदियों से चला आ रहा है। यदि वह न बनता, तो उस पर अज्ञानी, सामर्थ्यहीन व निष्क्रिय होने का आरोप लगता तथा उसके द्वारा बना दिये जाने के कारण अब आरोप नहीं लगा सकते। जब कोई रचना की जाती है, तो उसका प्रयोजन भी अवश्य होना चाहिए। तो इसका भी उत्तर वेद एवं वैदिक साहित्य से मिलता है, जो बताते हैं कि इस संसार में तीन सत्ताओं में से एक तो सर्वव्यापक चेतन सत्ता 'ईश्वर' है एवं अन्य दो सत्ताएँ जीवात्मा व प्रकृति हैं। जीवात्मा भी एक चेतन तत्व है, जो एक देशी व अल्प परिणाम है। प्रकृति एक अति सूक्ष्म जड़ तत्व है। मूल प्रकृति सत्व, रज व तम गुणों की सम्यावस्था है, जो परिणाम में अनन्त है व प्रलयावस्था में इस सारे ब्रह्माण्ड में फैली हुई होती हैं। जीवात्माएं चेतन होने के कारण ज्ञान, इच्छा व प्रयत्न गुणों को प्रत्यक्ष अथवा व्यवहार में लाने के लिए इसे मनुष्य,पशु, पक्षी, कीट अथवा पतंग आदि किसी योनि में शरीर सहित अवस्था में होना आवश्यक है। जन्म धारण से पूर्व अथवा मृत्यु के पश्चात यह जीवात्माएं मूर्च्छित अवस्था में होती हैं। अब ईश्वर क्योंकि सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान चेतन सत्ता है, अतः उसका कर्तव्य व दायित्व है कि वह जीवात्माओं के लिए शरीरों की रचना करें। शरीरों की रचना से पूर्व इस सृष्टि को रचना अनिवार्य है। अन्यथा मनुष्य के रूप में जीवात्माएँ अपने शरीरों से ज्ञान, इच्छा व प्रयत्न गुणों का उपयोग नहीं कर सकेंगी। इस कारण ईश्वर को सृष्टि की रचना करनी होती है। ईश्वर में सृष्टि की रचना करने का ज्ञान व सामर्थ्य दोनों है। सृष्टि रचना के लिए ईश्वर ईश्वर प्रकृति के अति सूक्ष्म कणों - सत्व, रज व तम से भिन्न-भिन्न प्रकार के परमाणु आदि बनाकर उन्हें स्थूलाकार करता है और यह विकृतियाँ ही घनीभूत होकर सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व पृथिवीस्थ सभी पदार्थ अग्नि, जल, वायु आदि के रूप में परिवर्तित की जाती है। वैदिक साहित्य में ईश्वर द्वारा सृष्टि रचना का वर्णन करते हुए बताया गया है कि सत्व, रज व तम की साम्य अवस्था के बाद पहला विकार महत्व का होता है। फिर अहंकर नामक तत्व या पदार्थ अस्तित्व में आता है। उससे पाँच तन्मात्राएँ मन, बुद्धि, चित्त, पाँच ज्ञान इंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ आदि बनती हैं, जो ईश्वर द्वारा बनाई जाती हैं। इससे पूर्व कि गोरा व काला के भेद की चर्चा करें, यहाँ पहुँचकर ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का उल्लेख करना भी आवश्यक है।

ईश्वर का स्वरूप - सत्य, चित्त, आनन्दयुक्त निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त निर्मिवकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टिकर्ता आदि हैं। ईश्वर जीवात्माओं, को पूर्व किये हुए कर्मों का फल देता है, जो कि जाति, (मनुष्य, पशु, कीट, पतंग आदि), आयु एवं सुख-दुख रूपी भोगों के रूप में प्राप्त होता है। जीवात्मा अर्थात हमारा स्वरूप चेतनस्वरूप, एक देशी, अल्प परिणाम, निराकार, अल्प शक्ति, अल्पज्ञ अर्थात अल्प-सीमित-कम ज्ञान रखने वाला, अनादि, अजन्मा, अमर ज्ञान के लिए माता-पिता-आचार्य-पुस्तकों सहित ध्यान व समाधि में परमात्मा से विद्या व ज्ञान प्राप्त करने वाला आदि स्वरूप वाला है। कर्मों को करना फलों को भोगना भी इसका स्वरूप है। इसी प्रकार प्रकृति एक जड़ पदार्थ है। कारण रूप में यह सत्व, रज, तम की सम्यावस्था के रूप में होती है और कार्य रूप में यह सत्व, रज व तम की समावस्था के रूप में होती है और कार्य रूप में यह सूर्य, पृथिवी, चन्द्र, अग्नि, जल, वायु, आकाश और इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रूप में होती है।

अतः ईश्वर जीवों को उनके पूर्व जन्मों, व कल्प-कल्पान्तरों में किए हुए कर्मों का फल देने के लिए यह सृष्टि रचकर उन्हें मनुष्य, पशु-पक्षी आदि योनियों में जन्म देता है। अच्छे व कम खराब कर्म वालों को मनुष्य व खराब तथा कम अच्छे कर्म करने वालों को पशु, पक्षी, आदि निम्न योनियाँ मिलती हैं। भारतीय समाज की मुख्य समस्या जन्मना जातिवाद है। महर्षि दयानन्द ने समाज से ऊँच-नीच का भेद हटाकर सबको सामाजिक दृष्टि से समान स्थिति प्रदान करने के पक्ष में आंदोलन किये। उन्होंने कहा कि अपने गुण, कर्म, सदाचार द्वारा ही मनुष्य उच्च पद प्राप्त कर सकता है। जन्मना जातिवाद एक अभिशाप है, जिसे मिटाने में विशेष प्रयास किये जाने चाहिए। अब मनुष्य जन्म का निर्धारण हो जाने पर भी सभी जीवों के करम समान नहीं होते। अतः पूर्व किए हुए इन्हीं कर्मों के आधार पर माता-पिता, रंग, रूप, देश व काल आदि का निर्धारण होता है। मनुष्यों में जो भिन्न-भिन्न आकृतियाँ रंग, व रूप मुख्यतः गोरा व काला, कद-काठि, सुन्दरता व कुरुपता, स्वास्थ्य आदि हैं, वह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण ही होते हैं। ईश्वर के सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु आदि होने के कारण उसे इन बातों का निर्णय करने में कोई विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता और न ही समय लगता है। ऐसा समझना चाहिए कि ईश्वर के पास इसकी स्वचालित व्यवस्था है। सांवले

या काले रंग का होना कोई विशेष महत्व नहीं रखता। मुख्य बात तो मन व बुद्धि की पवित्रता, आचरण, व्यवहार, सदाचार - चरित्र आदि की पवित्रता, आचरण, व्यवहार, सदाचार-चरित्र आदि की है। जो अधिक ज्ञानी, सच्चरित्र व स्वस्थ है वह काला, साँवला, असुन्दर व कुरूप होकर भी गोरे रंग के अज्ञानी निर्बल चरित्र, सुन्दर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण व सम्माननीय है। परन्तु आज-कल व्यवहार में ऐसा देखने में आता है कि गुणहीन गोरे रंग के व्यक्तियों को गोरों से कम महत्व मिलता है। गोरे लोग काले लोगों को पसंद नहीं करते व कईयों के साथ ऐसा भी होता है कि गोरे लोग काले लोगों से दूरी बनाकर रखते हैं और वैवाहिक संबंधों में यह समस्या अधिक आती है । इसी मनोविज्ञान के अनुसार समाज में भी गोरों को पसंद किया जाता है। और काले लोगों की उपेक्षा हो जाती है। यह हमारे समाज की अन्ध धारणा या मान्यता है, इसे बदलना होगा और इसके लिए हमें ज्ञान का सहारा लेना होगा। इसके लिए विद्यालयों या स्कूल की पुस्तकों में पाठ दिये जा सकते हैं। विद्यालयों वा स्कूलों में अध्यापक बच्चों को इस पर विशेष रूप से पढ़ा व समझा सकते हैं कि वह जीवन में काले या गोरे का भेद न करें। क्योंकि ऐसा करने वाले लोग ईश्वर के दण्ड के भागी होते हैं। यह अच्छी बात है कि हमारे संविधान व कानून में मनुष्यों के गोरे व काले रंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। भेदबाव का अन्य कारण मानसिकता से भी जुड़ा हुआ है। क्योंकि हम लोग अंग्रेज़ों के गुलाम रहे हैं और अंग्रेज़ों के गोरा होने के कारण वह हम भारतीय, जो काले, सांवले या कम गोरे होते थे व हैं, पर अत्याचार करते थे। अतः हमें भी उनसे यह मिथ्या धारणा या अन्ध परम्परा विरासत में मिली, जो हमारी मानसिकता में शामिल हो गई है, जिसे शिक्षा, ज्ञान व विवेक से दूर करना है। काले व गोरे व भिन्न-भिन्न आकृतियाँ जिनमें लम्बा, नाटा, पतला-दुबला, मोटा, सुन्दर, कुरूप आदि होने के पीछे अन्य कई कारण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। हमारी पृथिवी के सभी भागों पर लोग रहते हैं। कहीं सर्दी अधिक है, तो कहीं गर्मी अधिक होती है। कहीं वर्षा अधिक होती है, तो कहीं बिल्कुल ही नहीं होती। कहीं उर्वरा भूमि है, तो कहीं रेगिस्तान, जहाँ घास तक भी नहीं होती और वहां पशुपालन भी नहीं किया जा सकता। कहीं पहाड़ हैं, तो कहीं मैदान। अतः भौगोलिक कारणों से भी मनुष्य गोरे व काले रंग के होते हैं। अन्य कारणों में लोगों के रहन-सहन, खान-पान, धार्मिक विचार, आचरण, सोच, श्रम, व्यायाम या परिश्रमपूर्ण जीवन भी कारण होता है। अफ्रीका में प्रायः निर्धन लोग जिनके पास अधिक साधन व सुख-सुविधाएं नहीं हैं, अधिक काले होते हैं। भारत की जल-वायु शीतोष्ण होने के कारण यहाँ गोरे व काले तथा सभी कद-काठी व रंग के लोग होते हैं। संतानों के गोरे व काले रंग का होने के कारण प्रायः मात-पिता के अनुरूप होना भी है। यदि माता-पिता दोनों काले हैं, तो संतान का काला होना प्रायः निश्चित होता है। गोरे माता-पिता की संतान गोरी ही होती है। परंतु रंग का प्रभाव किसी भी रूप में व्यक्ति के गुणों, ज्ञान व सदाचार आदि गुणों व चारित्रिक विशेषताओं पर नहीं पड़ता है। अतः शिक्षित लोगों को इन बातों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए और यदि प्राथमिक शिक्षा में ही इस विषय को सम्मिलित कर लिया जाए, तो इससे भावी पीढ़ी की मानसिकता में परिवर्तन लाया जा सकता है। गोरे रंग के लोग स्वयं गोरे नहीं बने और इसी प्रकार काले रंग के व्यक्ति अपनी इच्छा से काले नहीं बने हैं। ईश्वर ने हम सबको बनाया है और इसके पीछे कारण हो सकते हैं, जिसका ज्ञान केवल ईश्वर को ही हो सकता है। हमें तो बस अपने पूर्व किये हुए अच्छे व बुरे कर्मों का भोग करना है, जो सुख या दुःख के रूप में हमें मिलते रहते हैं। अच्छे कर्मों के आधार पर हमें जो सुख - सुविधाएं प्राप्त हुई हैं, उनका उपभोग केवल स्वयं को जीवित रखने के लिए ही करें। सुख भोग की इच्छा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि विवेचना से यह ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक सुख के साथ चार प्रकार के दुःख यथा परिणाम ताप, संस्कार, एवं गुणवृत्ति विरोध दुःख जुड़े हुए हैं। हर सुख का परिणाम कुछ मात्रा में दुःख अवश्य ही होता है। हमने कई बार पढ़ा कि लोगों ने शराब पी, वह ज़हरीली थी, उन्होंने सुख के लिए पी थी तथा परिणाम में उन्हें मृत्यु रूपी दुःख मिला। स्वादिष्ट भोजन भी यदि बिना परीक्षा किये करते हैं, तो उससे भी दुःख मिलता है। जैसे वह ठीक प्रकार से न बनाया गया है। उसमें ऐसे पदार्थ हो सकते हैं, जो हमारे शरीर और स्वास्थ्य के अनुकूल न हो और हो सकता है कि एक-आध परिस्थिति में उसमें कुछ विष व हानिकारक पदार्थ आदि मिले हुए हों। अतः मनुष्य जीवन का उद्देश्य सुख भोगना मात्र ही नहीं है, अपितु दुःखों की पूर्ण निवृत्ति है, ऐसा विद्वान ज्ञानी मानते हैं।

अतः गोरे लोगों द्वारा काले लोगों को अपना मित्र बनाकर उन्हें पूरा सम्मान देकर किसी प्रकार का अन्याय या पक्षपात न कर व उनके ज्ञान व उनके परिश्रम आदि गुणों की प्रशंसा कर व उनसे लाभ उठाकर अपने दुःख निवृत्ति के उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। यदि कोई रंग के आधार पर भेदभाव करता है, तो यह निश्चित है कि वह अपने जीवन के प्रमुख लक्ष्य दुःख या निवृत्ति के उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। यदि कोई रंग के आधार पर भेदभाव करता है, तो यह निश्चित है कि वह अपने जीवन के प्रमुख लक्ष्य, दुःख, निवृत्ति या बार-बार के जन्म-मरण से मुक्ति अथवा मोक्ष से दूर चला जाएगा। यह शास्त्रों की शिक्षा अनुमान या शब्द प्रमाण से सिद्ध है। अतः किसी को भी शरीर की त्वचा के रंग - गोरे या काले के आधार पर परस्पर भेद-भाव कदापि नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करना ईश्वर व उसकी दया व कृपा से दूर होना है। जिसकी सज़ा मिलेगी और हम अपने जीवन के उद्देश्य मोक्ष से दूर हो जाएँगे। ईश्वर चाहता है कि हम सुखों व मिथ्या आचरण का त्याग कर ईश्वर का ध्यान चिन्तन व परोपकारमय जीवन व्यतीत करें। प्रत्येक स्त्री-पुरुष का यही कर्तव्य है कि वह इसी प्रकार से कर्तव्यों का निर्वाह करें। अतः मनुष्यों को रूप व रंग के आधार पर भेद-भाव कदापि नहीं करना चाहिए। ऐसा करना अनुचित है और ऐसा करने वालों का जीवन व्यर्थ हो जाता है और मोक्ष रूपी लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।

हम यहाँ संस्कारों का भी वर्णन करना चाहते हैं। शरीर वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि वह अच्छी श्रेष्ठ संतान, जो सुंदर, आकर्षक बलवान, बुद्धिमान, चारित्र्यवान,

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सिर पर मैला ढोने की प्रथा अमानवीय

- **महावीर त्यागी**

'सफाई में खुदाई' है अर्थात् ईश्वर के बाद यदि किसी का स्थान आता है, तो वह है सफाई। सफाई के लिए इसे बड़ी बात और क्या की जा सकती है। मैं संसार के विषय मेंतो नहीं जानता परंतु अपने इस भारत देश में देश को, समाज को और लोगों को सफाई से रहने मदद करने वाले समुदाय को लोगों ने अछूत कहकर और उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार करके अपमानित किया है। विडम्बना देखिए गंदगी करने वाला ब्राह्मण या सवर्ण और जो सफाई करें, वह महतर, भंगी या अछूत। सही अछूत तो बिजली का नंगा तर है। ज़रा छूकर तो देखिए, अछूत तो बिच्छू या साँप है। मनुष्य को अछूत कहना या समझना यह तो समाज पर कलंक है। सफाई करे वह पंडित और गंदगी करे, वह पंडित और गंदगी करे, वह नीचा, होना तो यह चाहिए। सफाई करने वाला तो समाज को सुसंस्कृत बनाता है, बहुत से रोगों से छुटकारा दिलाता है। सब जानते हैं कि गंदगी बहुतसी बीमारियों का घर है, कारण है। सफाई करने वालों का तो पूरा समाज ऋणी है। यदि ये भद्र लोग इस आवश्यक और पवित्र कार्य को न करें, तो जल्दी ही पूरे समाज को नानी याद आ जाए। पूरे समाज को इन सफाई करने वाले भाइयों का उपकार मानना और व्यक्त करना चाहिए। सफाई में खुदाई है, तो सफाई करने वाले ईश्वर के बाद का दर्जा पाने के हकदार हैं।

सच मानें, तो इन भाईयों की यह दशा इसलिए हुआ कि सफाई कार्य करने वालों को कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। न इस कार्य को वैज्ञानिक बनाया गया, न सफाई के साधनों में नई तकनीक का प्रयोग हुआ। यदि वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया गया हो, तो नये आधुनिक तकनीक वाले साधन और औज़ार होते, तो जिस प्रकार आज़ादी से पहले और बहुत दिन बाद कभी गाँवों में एक दाई खासकर वाल्मिकी की महिला बच्चा पैदा करती थी और ८-१० दिन तक सभी पड़ोसी उस परिवार से भी अछूत सा व्यवहार करते थे। बाद में हवन कराकर उस परिवार से सामान्य व्यवहार होता था। परन्तु अब पढ़ी-लिखी महिलाओं को वैज्ञानिक प्रशिक्षण देकर वैज्ञाकि तरीके से अच्छी तकनीकी की की मदद से बने औजार देकर एक साफ-सुथरी पोशाक पहनाकर नर्स के और डॉक्टर के रूप में जो यह कार्य शुरू हुआ है, तो इससे पेशे की इज़्ज़त बढ़ी है। इन काम करने वाले या वालियों को अब सम्मान मिलता है, अधिक पैसा दिया जाता है। इन्हें वाहन से लाते हैं, ले जाते हैं। कहना न होगा कि देखते ही देखते इस पेशे को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य समाज की महिलाएँ कर रही हैं र उन्हें पूरा सम्मान मिल रहा है। यदि इस प्रकार सफाई काम को भी नये साधनों और आधुनिक प्रशिक्षण देकर कराया जाए, तो सफाई कार्य को हर कोई करने के लिए तैयार होगा। आर्थिक स्थिति सुधारने पर भी इस कार्य को सब लोग करने को तैयार होंगे। सफी करने वालों का भी सम्मान बढ़ेगा। हर कोई इस कार्य को करने के लिए तैयार होगा।

यूँ तो गाँव, कस्बों नगरों और महानगरों सभी को सफाई चाहिए। यहाँ हम ग्राम सफाई की चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि शहरों में तो किसी न किसी रूप में टाउन एरिया कमेटी, नगरपालिका और महानगर परिषदें, जिम्मेदारी से इस कार्य को करती हैं। परन्तु गांवों में पंचायती राज कायम होने पर भी सामूहिक सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है। व्यक्तिगत सफाई लोग अपने से अवश्य कर लेते हैं। अपने घर-आंगन, वस्त्रों, बिस्तरों व शारीरिक सफाई को अपनी सूझ-बूझ और उपलब्ध साधनों से साफ करते और रखते हैं। परन्तु घर आंगन, का कूड़ा गली में फेंकने में ज़रा भी संकोच नहीं करते, तभी तो किसी ने क्या खूब कहा कि स्वच्छ लोग और अस्वच्छ देश (क्लीन पीपल एंड अनक्लीन कंट्री) इसी नाम से एक किताब भी छपी है। उसे पढ़ने से सच्चाई पूरी तरह से समझ में आ जाती है।

कई विदेशी यात्री भारत में आये। उन्होंने उस समय के गाँवों की सफाई, सुन्दरता और व्यवस्थितथा की बहुत प्रशंसा की है। परंतु संत विनोबाजी, जिन्होंने इस देश की १३ वर्ष तक पदयात्री की और पूरे देश को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक नापा था। और भूदान आंदोलन में करीब १,२५,०००० बीघा ज़मीन दान में प्राप्त की थी। वे जब प्रायः चार बजे अन्धेरे में अपनी यात्रा आरम्भ करते और रास्ता भटक जाते, तो वे अपने काफिले के साथ रुकते और कहते कि सब गहरी लम्बी साँस लो और देखो कि बदबू किधर से आ रही है। उसी ओर चलते, तो कुछ दूरी पर कोई न कोई गाँव आ जाता। उस गाँव में पूछकर अपना सही मार्ग खोज लो। आज यह दसा कमोबेश सभी गाँवों की है। आज़ादी के ६५ वर्ष बाद भी गाँव सफाई के मामले में कचरे-कूड़े के ढेर बने हुए हैं। गाँव में प्रवेश करने से पूर्व ही कूड़ियाँ (कूड़े-कचरे के ढेर) और आवारा कुत्ते भौंकते हुए स्वागत के लिए होते हैं। आगे बढ़ते हैं, तो कच्ची गली, घरों से निकलने वाले पानी के कारण कीचड़ इस हद तक कि वाहनों का निकलना तो संभव नहीं, की स्थानों पर तो पैदल तक निकलना कठिन हो जाता है। गलियों में पशुओं का गोबर, घरों से फेंका हुआ कूड़ा-कचरा, कुत्ते-बिल्ली आदि का मल, इधर-उधर पड़ा हुआ मिलता है। आज वी गाँवों के चारों ओर खुले में शौच करके गाँवों के भाई-बहन गाँव को गंदा करते हैं औक प्रदूपण फैलाते हैं। आज यदि गाँव की कुछ गलियाँ पक्की बनवाई भी जा रही हैं, तो वो टुकड़ों में बनती हैं उनका सही ढलान नहीं हो पाता।

हर कोई अपने घर के सामने थोड़ी ऊँची गली बनाना चाहता है। और दबंग लोग ऐसा इसलिए करा लेते हैं कि गाँव का जिम्मेदार सरपंच या प्रधान और पूरी पंचायत इसलिए उन्हें नहीं रोक पाती क्योंकि उन्हें अपनी वोट खराब होने का डर रहता है। आज वोट खराब होने का डर पंचायत सदस्य से लेकर विधायक और लोकसभा सदस्य तक सभी को सताता है और कारणों के साथ ही कार्य न हो पाने में यह भी एक बहुत बड़ा कारण है। हर राजनैतिक पार्टी के नेता वोट की चोट का डर पूरी तरह मानते हैं। गलियाँ पक्की बनती हैं, तो नालियाँ न बनने से पानी घरों से निकलकर इन पक्की गलियों को भी खराब करता है। नालियाँ बनी भी हैं, तो उनकी सफाई न होने से वही पानी फिर रास्तों को खराब करता है। गाँव में लोग आजकल भी मकान बनाते हैं। अच्छा बड़ा मकान बनाएंगे, परंतु उसमें न तो शौचालय होता है, न स्नानघर बनाते हैं न ठीक तरह से रसोईघर ही वनता है।

पशुओं के लिए वी सही तरह की खुली और नीचे सही पक्का फर्श भी बहुत कम हो पाता है। घरों को लीप-पोत कर एक बार अवश्य सुन्दर बनाते हैं, परंतु धुएं के कारण कुछ ही दिनों में वह सुन्दर घर काला हो जाता है। धुएं के कारण घर की बहन की आंखों और फेफड़ों के रोग अमूमन देखने मेंआते हैं। घर इतना काला हो जाता है कि वर्षा के दिनों में वह धुएं का काला पदार्थ टपकता है और घर की सभी वस्तुओं को गन्दा करता है। आज सरकारी मदद से शौचालय वनाए जा रहे हैं। उनमें भी बनवाने वाली संस्था को आँकड़े दिये जाते हैं। क्योंकि तभी उनके पूरे बिल्लों का भुगतान हो पाएगा। परन्तु लोगों को शौचालय क्यों, उनसे होने वाले लाभ आदि पर कोई चर्चा न होने से जनमानस को सही समझ पैदा किये बिना देखा यह भी गया है कि इन शौचालयों आदि में घर की महिला उपले (कंडे) या दूसरा सामान भर लेती हैं और शौच के लिए बाहर इधर-उधर जाती रहती हैं। गाँव में पेशाब घर तो कहीं भी नहीं होते। लोग इधर-उधर पड़ोस के किसी मकान में गलियों के मोड़ पर जैसे-तैसे इस आवश्यक क्रिया को करते हैं। कई बार तो किसी महिला के आ जाने पर दोनों ही शर्मसार होते हैं। लोगों का यह भी कहना होता है कि शौचालय आदि के लिए घरों में स्थान नहीं है। मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि यदि कोई भी घर वाला मन से शौचालय बनाना चाहता है, तो छोटे से छोटे घर में भी शौचालय बनाया जा सकता है। लोगों में इच्छा शक्ति पैदा करने की भी बहुत आवश्यकता है।

भ्रष्टाचार मिटाने का सुझाव

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

भ्रष्टाचार की समस्या बहुआयामी और संक्रामक है। बहुआयामी कहना न्यूनोक्ति है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार सर्वव्यापक लगता है। इस समय हमारे देश में शायद ही कोई क्षेत्र होगा, जिसमें ईमानदारी से काम हो जाता हो। सबसे नीचे के स्तर पर गाँव के लेखपाल से लेकर तहसील तक और तहसील से लेकर जिले के स्तर तक शायद ही कोई काम होगा, जो ईमानदारी से बिना कुछ लिये-दिये सम्पन्न हो पाता है। जिले से प्रांत की राजधानियाँ तथा देश की राजधानी दिल्ली तक सर्वत्र भ्रष्टाचार फैला हुआ है। राजनीतिक पार्टियों में और सरकार में सब जगह संसाधनों के आँकड़े जोड़े-घटाए जाते हैं। चरित्र और ईमानदारी का मूल्य लगभग शून्य हो गया है। चुंनाव में किसको टिकट दिया जाए, निर्वाचित होने पर किसको मंत्रिमंडल में लिया जाए, मंत्रिमंडल में भी किसको क्या विभाग सौंपा जाए, ये सभी निर्णय संसाधनों के जुटाने के हिसाब से ही तय किये जाते हैं। मंत्रिमंडल के बाहर भी ऐसे बहुतसे पद पोस्ट होते हैं, जिनमें बहुत पर्याप्त अर्थिक उपलब्धि होती है। इन सभी नियुक्तियों में योग्यता कम और पार्टी के लिए जितना अधिक फण्ड लाया जा सकता है, उसका उतना अधिक मूल्य पद पोस्ट की नियुक्तियों में लगाया जाता है।

सरकारी कामकाज में ढिठाई या निर्लज्ज़ता इतनी अधिक बढ़ गई है कि अच्छी-बड़ी संख्या में लगभग एक तिहाई से भी अधिक

विधायक और सांसद अपराधिक मामलों से जुड़े हुए हैं। इस समय तो भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल में एक घोटाले के बाद दूसरा घोटाला और दूसरे घोटाले के बाद तीसरा घोटाला, घोटालों की श्रृंखला बनती जा रही है और सरकार है कि अपनी विश्वसनीयता का प्रवन्ध जैसे-तैसे किये जा रही है और सरकार को बचाये जा रही है।

यह केवल सरकार और चुनाव की ही बात नहीं है। बल्कि आज किसी भी क्षेत्र में बिना परोक्ष की व्यवस्था के कोई काम नहीं हो पा रहा है। चपरासी से लेकर बाबूगिरी अ यापिकी या कोई अन्य नियुक्ति बिना परोक्ष प्रबन्धन के शायद ही कहीं पर हो पा रही ही होगी।

भ्रष्टाचार केवल सरकारी काम-काज या राजनीति में ही नहीं है। सामाजिक स्तर पर शुद्ध सामान, बिना मिलावट के कोई वस्तु अच्छी, शुद्ध, सही दवाइयों का भी मिलना दुर्लभ हो गया है। थोक बाज़ार हो या खुदरा बाज़ार हो, शुद्ध वस्तुओं का मिलना कठिन हो गया है।

राजनीति और बाज़ार की बात तो अपनी-अपनी जगह पर है। इन क्षेत्रों में भ्रष्टाचार और बेईमानी के आर्थिक आकर्षण हैं। इस समय सामाजिक स्तर पर इतना भ्रष्टाचार, इतना दुराचार इतना कुत्सित कदाचार है, जैसा पहले सुनने को नहीं मिलता था। बलात्कार, व्यभिचार, यौन-उत्पीड़न, आत्महत्या और भ्रूण हत्या जैसे अपराधों से समाचार पत्र भरे हुए हैं। इधर सरकार है कि एक्साइज ड्यूटी कमाने के लिए शराब, नाइट क्लब, रात की रंगीनियाँ और भी अन्य प्रकार के दुराचार के उत्तेजक विज्ञापनों को बहुत सुलभ किया गया है। एक प्रकार से देखें, तो इस समय भ्रष्टाचार अपने विभिन्न रूपों में देश के सभी क्षेत्रों में व्याप्त हो गया है। इस तरह इतने व्यापक पैमाने पर भ्रष्टाचार मिटाने का उपाय खोजना सभी विचारशीलों का आवश्यक नैतिक दायित्व बनता है।

भ्रष्टाचार का कारण - भ्रष्टाचार बौद्धिक तथा आध्यात्मिक मानसिक विकार का फल है। यह चरित्रगत विकार से उत्पन्न होता है। अतः भ्रष्टाचार का समाधान मन को शुद्ध करने और चरित्र को सुधारने से है। यह केवल थाना-पुलिस, न्यायालय के क्षेत्र से अलग भी समाधान की अपेक्षा रखता है। भ्रष्टाचार का समूल, समग्र, उन्मूलन तो आज के समय में असमम्भवसा ही लगता है। किन्तु इसे पर्याप्त सीमा तक कम करने, मिटाने, के दो प्रकार के कार्यक्रम समझ में आते हैं। - १) विधेयात्मक उपाय और २) नियंत्रणात्मक उपाय।

१) विधेयात्मक उपाय - विधेयात्मक उपाय आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा और समाज की चिन्तनधारा से संबंधित है। आज हमारी शिक्षा सर्वथा एकांगी हो गई है। इस समय शिक्षा में बुद्धि की तीव्रता विज्ञान और तकनीकी (टेक्नोलॉजी पर ज़ोर दिया जा रहा है। नैतिकता, आदर्श, मानवता, सत्य, कर्तव्य, सामाजिक दायित्व आदि पर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। इस समय शिक्षामंत्रालय को मानव संसाधन प्रबंधन का रूप दे दिया गया है। समाज में शान्ति, सुव्यवस्था, सदाचार, इत्यादि शिक्षा के साध्य थे। इस समय शिक्षा का उद्देश्य मानव संसाधन के द्वारा आर्थिक विकास मात्र रह गया है। पहले विद्यालयों की पुस्तकों में आदर्श, सच्चरित्रता, ईमानदारी आदि के पाठ पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित होते थे। श्रवणकुमार, सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथाएँ तो बहुत दूर चली गई। आज तो 'पंच परमेश्वर' और 'नमक का दरोगा' जैसी चरित्र को बल देने वाली कहानियाँ भी नहीं पढ़ाई जा रही हैं। इस समय विज्ञान, परमाणु, टोक्नोलॉजी बहुत आवश्यक है। और उन्हें अवश्य ही पढ़ाना चाहिए। किन्तु चरित्र को सुधारने वाले तंत्रों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। सामाजिक माहौल को भी सत्याचार मूलक बनाना आवश्यक है।

इधर अभी हाल में मानव संसाधन मंत्रालय के नये मंत्री एम.एम. पल्लम राजू ने यह घोषणा की है कि शिक्षा में नैतिकता को स्थान देने की बहुत अधिक आवश्यकता है। हम मानव संसाधन मंत्री जी को धन्यवाद तो दे सकते हैं कि उन्हें नैतिकता का ध्यान आया। किन्तु केंद्रीय सरकार और अनेक प्रांतीय सरकारें राजस्व की वसूली बढ़ानेके लिए शराब, जुआ, नाइट क्लब, होटलों में रंगीनियों को प्रोत्साहन देने पर तुली हुई हैं। भारत आज भी लगभग ८० प्रतिशत गाँव में बसता है। आज गाँव मेंभी संचार माध्यम की बदौलत टी.वी. इण्टरनेट आदि की पहुँच के कारण शराब और दुराचार, कदाचार बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है। सरकार मतदाताओं को लुभाने के लिए राहत की व्यवस्था कर रही है। बेकारी भत्ता, विधवाओं को भत्ता, राहत दी जा रही है। ग्रामीण रोज़गार योजना में काम की नहीं, रुपया लूटने की होड़ लगी हुई है। कई प्रांतों में इस लूट के हिसाब के लिए सीबीआई,की जाँच की माँग हो रही है। किन्तु सरकार बोट के लिए रुपए बाँट रही है। राहत और सहायता आपत्ति काल में अल्पकालिक उचित हो सकती है। किन्तु नागरिकों में परिश्रमशीलता, अपनी मेहनत पर निर्भरता का चरित्र पैदा करना चाहिए। लोग परिश्रम करें और रुपया पावें। नागरिकों में अकर्मण्यता को प्रोत्साहन देना राष्ट्रीय अपराध है। मातृभूमि या राष्ट्र को धारण करने वाले स्तम्भ, तत्वों का एक परिगणन अथर्ववेद के भूमि सूक्त में मिलता है। वह परिगणन भी राष्ट्र निर्माण और भ्रष्टाचार के उन्मूलक की दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युर लोकं पृथिवी नः कृणेतु।। अथर्ववेद १२-१-१

(शेष पृष्ठ १४ पर)

(पृष्ठ ७ का शेष)

सांस्कृतिक पतन

जिन्दा बाप को डेड और माँ को ममी से सम्बोधित करते हैं। अंकल और अंटी में ही बच्चे सारे रिश्ते-नाते समेट देते हैं। इससे ज्यादा अपनी राष्ट्रभाषा का अपमान और क्या हो सकता है कि हमारी संसद में भी अंग्रेज़ी का बोलबाला है और हमारे प्रधानमंत्री भी लोगों को अंग्रेज़ी में ही संबोधित करते हैं। यह सब मैकाले की शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है।

३. सामाजिक सद्भाव और शांति पर प्रभाव : - जब हमारी संस्कृति ही नष्ट हो गई है, तो हमारे शुभ संस्कार कहाँ से बचेंगे? आज पूरे देश में हत्या, लूट, बलात्कार, किडनैपिंग, रेप और गैंग रेप का बाज़ार गर्म है। उसके पीछे का मूल कारण है अपनी संस्कृति से बहुत दूर चले जाना। आज दिल्ली में हुआ दामिनी गैंगरेप इसका ज्वलन्त उदाहरण है। रेप और गैंग रेप का हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं रहा है।

४. लव का नशा और रिश्ते में कड़वाहट : -विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है, पर आज लव का नशा युवाओं में इतना परवान चढ़ गया है कि इसके प्रभाव में तथा विदेशी सभ्यता से प्रेरित होकर युवावर्ग विवाह पूर्ण अल्पवयस्क अवस्था में ही एक-दूसरे की आगोश में आकर अपनी संस्कृति की मर्यादाओं को चिढ़ा रहे हैं, मानो हमारे पूर्वज शायद लव करना जानते ही नहीं थे। यह लव के नशा को ही प्रभाव है कि आज लाखों लड़कियाँ कुँवारी माँ बनकर अपने नाजायज़ सन्तानों की भ्रूण हत्या का पाप भी कर रही है। बहुत जल्द ही जब लव का नशा समाप्त हो जाता है, तो स्थिति डाइवोर्स तक पहुँच जाती है। इन असफल शादियों की वजह से कितनी ही लड़कियों को आत्महत्या कर लेनी पड़ती है। कितनी ही लड़कियाँ परित्यक्त जीवन जीकर अपने भाग्य पर आँसू बहा रही हैं। हमारी संस्कृति में विवाह जीवनभर के लिए होता है, न कि आज इसे छोड़ा, उसे पकड़ा, उसे छोड़ा और तीसरे को पकड़ा। इसे जीवन भर प्रयोग करते रहते हैं। आज विदेशी संस्कृति के रंग में रंगकर हम अपने को इतने आधुनिक और नये समझने लगते हैं कि हमारे माँ-बाप ही पुराने लगने लगते हैं।

५. कर्मकांडों पर दुष्प्रभाव : -

विदेशी संस्कृति के प्रभाव से हमारे पूजा-पाठ और कर्मकांड भी नहीं बचे हैं। हमारी संस्कृति में अग्नि का बहुत महत्व है। हम प्रतिदिन की शुरुआत और सभी संस्कार अग्निहोत्र यज्ञ से करते थे, पर आज दो संस्कार ही अग्नि के प्रयोग से होते हैं। पहला विवाह के समय अग्नि के फेरे लेकर और दूसरा अन्त्येष्टि में अग्नि में भस्म होकर पंचतंत्र में विलीन होने के समय हम अगरबत्ती और मोमबत्ती का प्रयोग करते हैं, जिसका न तो कोई धार्मिक महत्व है और न ही वैज्ञानिक महत्व। जन्मदिन मनाते समय भी अग्निहोत्र यज्ञ का नहीं, बल्कि मोमबत्ती का प्रयोग किया जाता है। उसमें भी मोमबत्ती जलाकर नहीं, बल्कि जलती हुई मोमबत्तियों को बुझाया जाता है। उपरोक्त सभी प्रयास हमारे सांस्कृतिक पतन के हैं अतः हम अपनी संस्कृति को समझे और इसे ही अपनाएं।

(पृष्ठ ११ का शेष)

जन्मदिन पर आधारित.....

ईश्वरभक्त देशभक्त, माता-पिता गुरुजनों की आज्ञाकारी , परोपकारी, दूसरों का दुःखहरण करने की भावना रखने वाली हो, उसे कैसे बनाया जा सकता है। इसकी विधि व पद्धति की खोज करें। हमारे ऋषियों ने तो यह कार्य पहले ही किया हुआ है। इसके लिए उन्होंने हमें संस्कार विधि प्रदान की है। संस्कारवान सन्तान व भावी युवा पीढ़ी के लिए विवाह किस आयु में करें, भोजन कैसा करना चाहिए, शिक्षा-दीक्षा कैसी हो, सन्तान का लालन-पोषण किस प्रकार से हो, उनके आचार्य, व गुरुजन किस प्रकार के हों, आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान किस प्रकार से कराया जाए, एतद् विषयक समस्त ज्ञान व उसका पालन तथा ईश्वरोपासना योगाभ्यास व व्यायाम आदि का समावेश प्रत्येक माता-पिता-आचार्य व ब्रह्मचारी- विद्यार्थी के जीवन में हो, तो संतान व भावी पीढ़ी चरित्रवान व श्रेष्ठ आचार-विचारों को धारण करने वाली होगी। अच्छे सन्तान ब नागरिकों के लिए माता-पिता व आचार्यों का श्रेष्ठ आचारवान् होना आवश्यक है। प्राचीन काल में ऐसा ही होता था, तभी ऋषि-मुनि, राम-कृष्ण, हनुमान, चाणक्य, दयानन्द जैसी महान आत्माएँ इस धरती पर जन्म लेती थी। हमारी आज-कल की शिक्षा प्रायः संस्कार विहीन शिक्षा है, जिस कारण सामाजिक विषमताएँ उत्पन्न हुई हैं एवं प्रचलित हैं। महाभारत काल, जो आज से लगभग ५,२०० वर्ष पूर्व है, के बाद व अव्यवस्था छा जाने के कारण जन्म पर आधारित जातीय व्यवस्था, अनेक कुप्रथाएँ, ऊँच-नीच की भावना आदि का प्रचलन हुआ, जो आज भी विभिन्न रूपों में विद्यमान है।

(पृष्ठ १३ का शेष)

भ्रष्टाचार मिटाने....

राष्ट्र को धारण करने वाले ये तत्व हैं- १) सत्यम् - शासक और जनता दोनों ही मन, वचन, कर्म से सत्य का पालन करें। बृहत् महान, उद्यम, उद्योग ३) ऋतम - उचित ४) उग्रम - तेजस्विता, बुद्धि, शक्ति, सेना आदि ५) दीक्षा - उद्देश्य के लिए समर्पण, ६) तपः - स्वकर्तव्य म परिश्रम, ७) ब्रह्म - महान ८) यज्ञः - निःस्वार्थ समन्वय, सामंजस्य, पूज्यों का सम्मान इत्यादि। ये आठ तत्व राष्ट्र को स्तम्भ की तरह धारण करते हैं। ऐसा राष्ट्र अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को महान बनाता है। इस समय भी हमें उचित है कि हम अपनी शिक्षा को, पाठ्यक्रम को एकांगी न रहने दें और विज्ञान, बुद्धि, टेक्नोलॉजी के साथ कर्तव्य, आदर्श, ईमानदारी और चरित्र की भी शिक्षा दें। नियंत्रणात्मक उपाय - राष्ट्र में कुछ ऐसे नीच प्रकृति के दुष्ट लोग होते हैं, जिन पर आदर्श चरित्र, ईमानदारी, सम्बधी शिक्षाओं का प्रभाव नहीं पड़ता। उन पर केवल डण्डे का दण्ड का भय ही कुछ हद तक काम कर सकता है। ऐसे लोगों के लिए थाना-पुलिस, न्यायालय. सतर्कता आयोग, लोकायुक्त, लोकपाल आदि की व्यवस्था बनाई जाती है। आज तो हमारे देश में नियन्त्रात्मक व्यवस्था बी लंगड़ी, लूली हो चली है। शासन तन्त्र इस नियन्त्रण को भी आधे-अधूरे मन से लगाना चाहता है। नियंत्रण करे भी, तो कौन, जब शासन तंत्र स्वयं भ्रष्टाचार में डूबा हुआ हो। आज तो किसी भी शासन के अधिकारी को शायद ही कानून से डर लगता हो। मनु महाराज ने लिखा है-'दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः दण्ड एवाभि रक्षति'। दण्ड का सब पर शासन है और दण्ड रक्षा करता है। आज तो शासन को भी सोचना पड़ेगा कि उका दण्ड विधान कितना कारगर है।

आर्य समाज उत्तर लालागुड़ा का नवनिर्मित भवन उद्घाटित

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं युगादि पर्व के दिन आर्य समाज उत्तर लालागुड़ा में प्रातः ९ बजे सभा प्रधान श्री विट्ठलरावजी आर्य द्वारा ध्वजारोहण के बाद बृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात भवन का उद्घाटन उन्हीं के कर-कमलों द्वारा हुआ। सभा प्रधान श्री विट्ठलरावजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के सदस्य एवं अधिकारी गणों को अपने आपसी छोटे-मोटे मतभेदों को भुलाकर प्रेम व श्रद्धा के साथ चित्त शुद्धि से आर्य समाज के सभी कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए।

इस कार्यक्रम में नगर के आर्य समाजों के सदस्य एवं मातृ शक्ति ने भाग लिया।

पाकिस्तान में हिंदू मुक्त बंधुआ मजदूर ने खींचा दुनिया का ध्यान

आम चुनाव में उतरी वीरों कोल्ही

पाकिस्तान में आम चुनाव ११ मई को हने जा रहे हैं। वैसे तो पाकिस्तान की जम्हूरियत के लिए यह चुनाव कई मायनों में खास है। लेकिन एक नाम ने दुनियाभर का ध्यान अपनी ओर खींचा है। यह नाम है वीरो कोल्ही। वीरों कोल्ही लगभग ५० साल की हिन्दू महिला है। हाल ही में उनका नाम तब सुर्खियों में आया, जब स्थानीय अधिकारियों ने कागज़ी कार्रवाई पूरी कर उन्हें चुनाव लड़ने के लिए हरी झंडी दे दी। अब वीरों अपने कुनबे और समर्थकों के साथ सिंध प्रांत की धूल भरी सड़कों पर सियासी दाँव आज़मा रही है।

वीरों १९९० तक एक ज़मींदार के यहाँ बंधुआमजदूर के रूप में काम कर रही थी। ऐसा इसलिए हुआ, क्यों कि उसका पति ज़मींदार से लिया कर्जा नहीं लौटा पाया था। एक दिन वो वहाँ से भाग खड़ी हुई। खुद को आज़ाद कराने के बाद वीरों का संघर्ष खत्म नहीं हुआ और वह १० दिन के लिए अनशन पर बैठ गई। नतीजा यह हुआ, कि प्रशासन को कार्रवाई करनी पड़ी और ४० से ज्यादा बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराया गया।

सियासी दंगल में तकदीर आज़मा रही वीरों ने नियमानुसार अपनी संपत्ति की घोषणा की है और यह चौंकाने वाली है। उनके पास दो पलंग, पाँच चटाइयाँ, भोजन के चंद बर्तन, और बैंक खाते में जमा महज २८०० पाकिस्तानी रुपए हैं। जिस क्षेत्र से वीरों भाग्य आज़मा रही है, वह राष्ट्रपति असिफ अली ज़रदारी का गढ़ है। वीरों का सामना पीपीपी के सर्जील मेमन से है, जो इलाके के धनाड्य और रसूखदार शख्स हैं। वीरों के प्रचार दल में परिवार के २० सदस्य, और गरीब गुरबत समर्थक हैं। प्रचार के साधनों के नाम पर एक वैन और एक माइक है।

सिकंदराबाद आर्य समाज का ऐतिहासिक जुलुस

आर्य समाज, सिकंदराबाद द्वारा युगादि पर्व पर आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में निकाले गए ऐतिहासिक जुलुस का नेतृत्व करते हुए आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान पं. धर्मपाल शास्त्री (मेरठ) एवं जुलुस की झाँकियाँ। इस विशाल जुलुस में नगरद्वय की सभी समाजों ने अलग-अलग बैनरों के साथ हिस्सा लिया। इनमें आर्य समाज गोपामहल, लालगुड़ा, बोयेनपल्ली, उम्दाबाज़ार, सैदाबाद, धूलपेट, शालीवंडा, कवाड़ीगुड़ा, सिताफल मंडी आदि उल्लेखनीय हैं। मुख्य रूप से सिताफल मंडी पाठशाला के छात्र-छात्राओं ने जो कला प्रस्तुत की, वह आकर्षक थी।

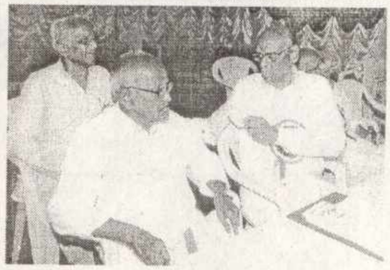

महात्मा हंसराज - एक स्मरणांजलि

-डॉ. शशिप्रभा कुमार

स्तिमितोन्नतसंचाराः जनसन्तापहारिणः। जायन्ते विरला लोके जलदा इव सज्जनाः ।। पंचतन्त्र अर्थात् दृढ और उत्तम आचरण वाले, लोगों का कष्ट दूर करने वाले बादल के समान उपकार करने वाले सत्पुरुष इस लोक में विरले ही उत्पन्न होते हैं। महात्मा हंसराज ऐसे ही विरले सत्पुरुषों में अग्रण्य हैं, जिन्होंने एक महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।इसतिहास साक्षी है कि यदि उन्नीसवीं सदी के पराधीन एवं रूढीग्रस्त भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एवं उससे प्रेरित होकर जीवन उत्सर्ग करने वाले महात्मा हंसराज महात्मा मुंशीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानंद) एवं लाला लाजपतराय जैसे धुन के धनी न होते, तो आज हमारे समाज का यह स्वतंत्र परिदृश्य और हमारी शिक्षा कायह समुन्नत स्वरूप न होता। इसमें सन्देह नहीं कि डीएवी शिक्षण संस्थाओं और आर्य गुरुकुलों से शिक्षित एवं दीक्षित होकर निकले युवकों ने देश को स्वाधीन बनाने एवं शिक्षा में संस्कृत, संस्कृति तथा संस्कारों की अलख जगाने में जितना योगदान किया है, वह अमूल्य है।

१९ अप्रैल, सन १८६४ ई,लीं में बजवाड़ा (जिला होशियारपुर, पंजाब) गाँव में लाला चूनीलाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गणेशीदेवी के यहाँ जिस शिशु ने जन्म लिया, उसने बड़ा होकर न केवल अपनी जीवन धन्य किया, अपितु अपने कुल को भी इतिहास में अमर बना दिया। राजकीय कॉलेज, लाहौर से बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने वाला बाईस वर्ष का युवक हंसराज यदि केवल अपने सुख की सोचता, तो आज हम उसका नाम भी न जानते। लेकिन दयानन्द के दीवाने हंसराज ने तो ऋषि-ऋण से उऋण' होने के लिए अपना सारा जीवन दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज (डी.ए.वी. कॉलेज) के मुख्याध्यापक पद पर अवैतनिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जीवन उत्सर्ग की ऐसी अविस्मरणीय घटना के ने असंख्य जवानों में जोश भर दिया और अगणित दानी महानुभावों को इतना प्रेरित कर दिया कि वे सब तन-मन-धन लुटाने को तत्पर हो गए। धन्य हैं वे लोग, जिन्होंने उस घड़ी को जिया और इस सर्वस्व-त्याग को साक्षात देखा।

कहना न होगा कि डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना ने एक आंदोलन को जन्म दिया, जिससे दासता की बेड़ियों में जकड़े हुए देश के नागरिकों में आत्मविश्वास एवं अपनी महान संस्कृति के प्रति गौरव का भाव हिलोरें करने लगा. महात्मा हंसराजजी जैसे तपस्वी एवं निःस्वार्थ गुरु को ही हमारे शास्त्रों में आचार्य की पदवी प्रदान की गई है।

'आचार्यः कस्मात् ? आचारम ग्राहयति आचिनोति बुद्धिमर्थान वा।' (निरुक्त)

अर्थात् शिक्षक को आचार्य क्यों कहा जाता है? सर्वप्रथम तो इसलिए कि वह अपने शिष्यों को आचार ग्रहण कराता है। अपने आचरण से उन्हें विविध विषयों का ज्ञान कराता है।

आज के वेतनभोगी, सुविधाजीवी शिक्षकों एवं वस्तुतः ढोंगी, पाखंडी किंतु तथा कथित गुरुओं से उस प्रकार के उदात्त ज्ञान एवं अनवद्य आचार की शिक्षा मिलना असंभव नहीं, तो दुष्कर अवश्य है। मुख्याध्यापक होते हुए भी महात्मा हंसराजजी स्वयं छात्रों की कक्षाएं लेते थे। प्रशासन कार्य देखते थे तथा अपने सहयोगियों एवं विद्यार्थियों में देशभक्ति के भाव भरने की चेष्टा करते थे। उनका सादा जीवन, उच्च विचारों वाला जीवन स्वयं साधना का साक्षात निदर्शन था। त्याग एवं तपस्या का ऐसा अद्‌भुत मणिकांचन संयोग महात्माजी को समाज के हर वर्ग में अपूर्व सन्मान एवं प्रतिष्ठा दिला गया, किंतु उनके छात्र तो मानो उनके एक संकेत पर जान छिड़कने को तैयार रहते थे। महातात्माजी भी अपने छात्रों की हितचिंता में परम आत्मीयता का अनुभव करते थे।

महात्मा हंसराज ने अपने 'स्व' का ऐसा विस्तार कर लिया था, कि वे केवल अपने रक्त का संबंध से जुड़े परिवार नहीं, अपितु व्यापक वैदिक परिवार की चिंता में व्यग्र रहते थे। यद्यपि यह भी सत्य है कि महात्मा जी के त्यागमय जीवन के पीछे उनके बड़े भाईजी का अपूर्व सहयोग एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती ठाकुरदेवीजी की मौन तपस्या भी बहुत बड़ा आधार थी। किंतु स्वयं महात्माजी तो मानो इन सब सीमाओं से ऊपर उठ चुके थे। तथा ग्रहस्थ होकर भी सर्वात्मना समाज सेवा में सन्नद्ध थे। स्वाधीनता आंदोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी प्रचार प्राध्यापन, प्रबंधन, प्रवचन एवं

लेखन आदि विविध क्षेत्रों में पूर्ण निष्ठा से दायित्व निर्वाह करते हुए महात्मा हंसराज अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और चुनौतियों को कभी अपने कर्तव्यपालन में बाधक नहीं बनने दिया। पत्नी का निधन एवं पुत्र की राजनैतिक गतिविधियों के कारण उसे दी जाने वाली अनेक प्रकार की यातनाएं भी विचलित न कर सकी।

निर्द्वन्द्व, निर्भिक और निःस्वार्थ वृत्ति के धनी, किन्तु भौतिक सुख-सम्पत्ति एवं सुविधाओं से सर्वथा निरपेक्ष महात्मा हंसराज जी ने मानो अपने माता-पिता द्वारा दिये गये नाम को क्रमशः सार्थक कर दिया। तभी तो संस्कृत के कवि की निम्न उक्ति सटीक प्रतीत होती है।

यात्सारभूतं तदुपासितव्यं हंसो यथा
क्षीरमिवाम्बुमिश्रम।

अर्थात् जो सार है, उसी का ग्रहण करना चाहिए। जैसे की हंस जलमिश्रित दूध में से केवल दूध ग्रहण कर लेता है। नीर-क्षीर विवेक की सामर्थ्य रखनेवाले राजहंस की भाँति महात्मा हंसराज जी ने भी जीवन के सार - सर्वस्व को समझ लिया था। तभी तो निःसार बातों की उपेक्षा करते हुए एकनिष्ठ भाव से अपने ध्येय की सिद्धी में लगे रहे। उनकी साधना और समर्पण के कारण डी.ए.वी. आंदोलन सप्राण हो उठा। किन्तु कैसी विडम्बना की उनके प्राणपखेरू उड़ते ही वह सात्विक सद्‌भावना धीरे-धीरे निष्प्राण होने लगी।

आशा है कि आज महात्मा हंसराज जी के जन्म दिवस पर डी.ए.वी. के सूत्रधारों में विशेषतः श्री पूनम सुरीजी की अध्यक्षता में जिसमें पितामह महाशय खुशहालचन्द्र जी को ही महात्मा हंसराज जी ने अपना हार्दिक अभिप्राय कहा था, जिन्होंने आमरण उसे बखूबी निभाया भी। यह प्रेरणा जागृत होगी की जिन पुण्य आत्माओं ने अपने खून-पसीने से सींचकर यह पौधा लगाया है, उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि तभी होगी, जब उनके जीवन संदेश का अनुपालन होगा तथा यह पौधा सदा हरा-भरा रहेगा।

प्रभु से प्रार्थना है कि हम सबको ऐसी सन्मति-सामर्थ्य एवं सदिच्छा प्रदान करें, स्वयं महात्मा हंसराज के शब्दों में -

प्यारे मित्रों आओ, ईश्वर के दरबार में प्रार्थना करें कि वह हमें लुप्त, गुप्त वैदिक धर्म को पुर्जीवित करने अथवा प्रसारित करने की शक्ति प्रदान करें।

जात-पात को मिटाने का सबसे प्रभावी उपाय है अन्तर्जातीय विवाह - स्वामी अग्निवेश

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के १२२वें जन्मदिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के सभागार में आयोजित सभा में स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही जात-पात विरोधी रहा है। हमने सप्त क्रांति का जो नारा दिया है, उसमें जातिवाद मुक्त समाज बनाने का भी संकल्प है। आज हम सबका अहवान करते हैं कि जातिवाद मुक्त समाज बनाने की संकल्पाग्नि अपने-अपने दिलों में धधकाएंगे। जिन्होंने अपने जीवन में अन्तर्जातीय विवाह किये हैं, अथवा जो युवा आगे प्रेम विवाह करना चाहते हैं, हम उन्हें प्रोत्साहित करेंगे। उनका अभिनन्दन करेंगे। स्वामीजी ने बताया कि पूरे देश में लगभग १०० अन्तर्जातीय विवाह प्रतिदिन हो रहे हैं। जो लोग आर्य समाज में विवाह कराते हैं, उन्हें एक सप्ताह पूर्व आर्य समाज का सदस्य बनाएं, और उसके बाद उनका विवाह कराएं। स्वामीजी ने कहा कि यह आर्य समाज के लिए गौरव का विषय है कि लोग आर्य समाज में अन्तर्जातीय विवाह कराने के लिए आते हैं। अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को हर प्रकार की सुरक्षा तथा सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए। जातिवादको नष्ट करने के लिए इससे अच्छा अन्य कोई उपाय नहीं हो सकता। स्वामीजी ने कहा कि आर्य समाज की उन्नति के लिए भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य होगा।उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर एक ऐसी आर्य बिरादरी बनायें कि जो भी अपने को आर्य कहे, उनके बीच सहज रूप से गुण, कर्म, स्वभाव की समानता में विवाह आदि के सम्वन्ध स्थापित हो सकें और लोगों को लगे कि आर्य समाज जातिवादी कोढ़ की बीमारी से मुक्त है।

स्वामीजी ने कहा कि वही सच्चे अर्थों में दयानन्द के सपनों का आर्य समाज कहलाएगा। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में जन्मना जातिवाद का विरोध किया है तथा वेद एवं मनुस्मृति पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन किया है। लेकिन हम अपनी बात को आम जनता के सामने स्पष्ट नहीं कर पाये, जिससे समाज में कुछ भ्रांतियाँ फैल गई हैं। हमें उन्हें दूर करना है तथा जातिवाद मुक्त एवं नारी उत्पीड़न मुक्त देश बनाने के लिए हमें वैदिक विचार का पुरज़ोर समर्थन तथा कार्य करना होगा।

स्वमीजी ने कहा कि जहाँ हम बाबा साहब अम्बेडकर का जन्मदिवस मना रहे हैं, वहीं गौतम बुद्ध, सन्त रविदास, ज्योतिबा फुले, साहू महाराज के भी जन्मदिवस मनाने चाहिए तथा उनके प्रेरणादायक प्रसंगों को याद कर जातिवाद मिटाने का संकल्प लें। स्वामीजी ने याद दिलाया कि देश में विभिन्न भागों में जम्मू, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश में हज़ारों लाखों, लोग हैं, जो स्वामी श्रद्धानंदजी की कृपा से जन्मना दलित होते हुए भी आर्य समाज में उन्हें शामिल किये गये और बाकायदा अपने नाम के आगे आर्य लगाते हैं। आज वह समय आ गया है कि हम उनको गले लगायें। आर्य जगत् में प्रतिष्ठित करें और अन्य आर्यों को भी अपने नाम के आगे जातिसूचक शब्द हटाकर आर्य लिखने की प्रेरणा दें ताकि एकरूपता बनी रहे। स्वामीजी ने कहा कि सरकार आर्यों को आरक्षण बी देती है, तो यह सोने पर सुहागा वाली बात हो गई कि आरक्षण का लाभ भी लो, और जातिवाद भी मिटाओ।

स्वमीजी ने कहा कि आज भी हिन्दुओं के अतिरिक्त मुस्लिमों, इसाइयों और सिखों में जातिवाद पूरी तरह छाया हुआ है। एस.सी. तथा ओ.बी.सी. में भी यह प्रथा कायम है। इन वर्गों में भी आपस में शादी-विवाह कराये जाने चाहिए। स्वामीजी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री गहलोत जी को बधाई दी उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को एक लाख रुपए देने की घोषणा की। वो धन्यवाद के पात्र हैं। उनका हम सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे। उन्होंने अन्य प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों से भी अनुरोध किया कि वे इस प्रकार की घोषणाएं करें और जातिवाद को दूर करने मेंअपना योगदान प्रदान करें। स्वामीजी ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर अपने युग के एक सजग प्रहरी थे। उन्होंने न केवल युग चेतना को जागृत किया, अपितु युग बोध का भी संदेश दिया। उन्होंने अपने युग के समाज को खुली आँखों से देखा तथा उसके व्याप्त कटुता, विषमता, एवं आडम्बरों का डंटकर विरोध किया। मैं उनके नमन करता हूँ। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेशजी ने एक प्रस्ताव पढ़कर सुनाया, जिसे अविकल रूप से आगे प्रकाशित किया जा रहा है।

इस अवसर पर लुधियाना से आये सन्त कुमारजी ने अपने समाज सुधार के कार्यो का विवरण देते हुए कहा कि आर्य समाज जन्मना जातिवाद को नहीं मानता और इस बुराई को मिटाने के लिए बहुत कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जातिवाद को मिटानेके लिए अन्तर्जातीय विवाह सबसे सरल रास्ता है। मैंने स्वयं अन्तर्जातीय विवाह किया है। मेरी माँ भी मुसलमान थी। उन्होंने कहा कि जात-पात के कारण हमारे दलित भाई हमसे दूर होते जा रहे हैं। उन्हें अपने गले लगाने की आवश्यकता है। आज दलितों, और निर्धनों में जाकर काम करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर उड़ीसा के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता आर्य कुमार ज्ञानेन्द्रजी ने कहा कि उड़ीसा में जात-पात का भेद अपेक्षाकृत कम है। वहाँ के प्रसिद्ध मंदिरों में मूर्तिपूजक और दलित वर्ग के लोग बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की विचारधारा और अम्बेडकर की विचारधारा में कोई खास फर्क नहीं है। लेकिन किन्ही कारणों से आर्यसमाज का चिंतन डॉ. अम्बेडकर को प्रभावित नहीं कर पाया। उनको सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाया। यदि डॉ. अम्बेडकर आर्य समाज के साथ मिल जाते, तो भारत का नक्शा कुछ और होता।

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश की साधारण सभा की बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के तत्वावधान में दि. २८ अप्रैल २०१३ को पं. नरेंद्र भवन में सभा प्रधान विठ्ठलरावजी आर्य की अध्यक्षता में साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें सभा के प्रतिनिधि एवं समस्त आर्य समाजों के अधिकारी गण सम्मिलित थे। जिसमें **'अंतरजातीय'** विवाह विषय पर विस्तार से विचार मंथन हुआ और यह निर्णय लिया गया कि जाति तोड़कर विवाह करने वालों को आर्य समाज द्वारा प्रोत्साहित करें। जातीवाद, सम्प्रदायवाद, संकीर्णता के ऊपर उठकर एक नये समाज का निर्माण करने में आर्य समाज को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। इस अवसर पर आर्य समाजों की ओर से तथा व्यक्तिगत रूप से सबा प्रधान विठ्ठलरावजी का सार्वदेशिक सभा के महामंत्री चुने जाने के उपलक्ष्य में सामूहिक रूप से सम्मान किया गया। तथा उन्हीं के द्वारा तेलुगु भाषा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन-चरित्र पर आधारित सिडी **'ऋषिगाथा'** का लोकार्पण किया गया। यह सिडी सभा में उपलब्ध है तथा सभी आर्य समाजों में तथा घरों में रखने लायक है।

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 27-04-2013 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707,
Fax:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

हैदराबाद के लौह पुरुष पं. नरेंद्रजी की १०६ वीं जयंती मनायी गयी

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश एवं नगरद्वय के आर्य समाजों की ओर से गत १९ अप्रैल को प्रातः ९ बजे कोठी स्थित पं. नरेंद्रजी की कांस्य प्रतिमा के पास उनकी १०६वीं जयंती मनायी गयी।

इस अवसर पर सर्व प्रथम देवयज्ञ किया गया। पं. प्रियदत्तजी शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे। इसके बाद सभा का आयोजन किया गया। समाजसेवी प्रो. केशवराव जाधव समारोह के मुख्य अतिथि थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान टा. लक्ष्मण सिंह आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पंडितजी को, प्रो. केशवराव जाधव, स्वतंत्रता सेनानी जगदीश आर्य, तथा मामिडि श्रीनिवास ने याद किया। भाजपा नेता गोविन्द राठी ने भी अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित की। सभा को जगदीश आर्य, पवन माल्वे, एवं केशवराव जाधव ने सम्बोधित करते हुए पंडित नरेंद्रजी की यशोगाथा का वर्णण किया। वक्ताओं ने निज़ाम की तानाशाही हुकूमत के दौरान उनके द्वारा किये गये संघर्ष और सही यातनाओं के संस्मरम सुनाए। मुख्य अतिथि केशवरावजी ने पं. नरेंद्र के जीवन को आदर्श बताते हुए वर्तमान प्रांत एवं राष्ट्र की विसंगतियों, समस्याओं और जाति मूलक राजनीति को देश की प्रगति के लिए घातक बताया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सूखे के कारण चारे के अभाव का कारण बनाकर पशुओं को ट्रकों में भरकर वधशालाओं को भेजा जा रहा है। ऐसे जघन्य कार्य को रोकने के लिए स्वयंसेवी संगठनों को आंदोलन करने की आवश्यकता है। सभा में आं. प्र. सभा के अधिकारी, नगरद्वय के प्रतिष्ठित आर्य समाजी, कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त स्वतंत्रता सेनानी सुखदेव आर्य ने भी भाग लिया।

हैदराबाद के कोठी चैराहे पर पं. नरेंद्रजी की कांस्य प्रतिमा के पास उनकी जयंती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश एवं नगरद्वय के आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दृश्य.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.सु.बाज़ार,हैदराबाद